RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 60 अंक : 10 प्रकाशन तिथि : 25 सितम्बर कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 अक्टूबर 2023

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

दुष्टों ने जग को हिलाया
मेरी पुरी में रंग जमाया
आना तो तुमको पड़ेगा, चाहे देर करो।। हे माँ.......

संघ के स्वयंसेवक झबर सिंह लूणाखुर्द, जीतू सिंह जानरा व जीवराज सिंह म्याजलार एवं संघ के सहयोगी कर्मेंद्र सिंह झिनझिनयाली, मदन सिंह पारेवर व हरपाल सिंह भादरिया का REET लेवल 1st में अंतिम रूप से चयन होने की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

झबर सिंह लूणाखुर्द

जीतू सिंह जानरा

जीवराज सिंह म्याजलार

कर्मेंद्र सिंह झिनझिनयाली

मदन सिंह पारेवर

हरपाल सिंह भादरिया

शुभेच्छु :-सांवल सिंह मोढ़ा, गणपत सिंह अवाय, भवानी सिंह मुंगेरिया, शैतान सिंह झिनझिनयाली, उम्मेद सिंह बडोड़ा गांव, रतन सिंह बडोड़ा गांव, शम्भू सिंह झिनझिनयाली, जितेंद्र सिंह पारेवर, रणजीत सिंह चौक, धर्मपाल सिंह आस्कन्दरा, बाबू सिंह सोनू (सूरत), महिपाल सिंह मोढ़ा, कंवराज सिंह सेतरावा, सांवल सिंह भैंसड़ा, नरपत सिंह लुणाखुर्द, राम सिंह संग्राम सिंह की ढाणी, शम्भू सिंह फुलिया, सुरेंद्र सिंह पोछिणा द्वितीय, प्रेम सिंह झिनझिनयाली, शंकर सिंह राजमथाई (सूरत)

संघशक्ति

4 अक्टूबर, 2023

वर्ष : 60 अंक : 10

-: सम्पादक :-

लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास

शुल्क – एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय – सूची

समाचार संक्षेप		04
चलता रहे मेरा संघ	श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर	07
पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)	श्री चैन सिंह बैठवास	08
सिंध शासक-दाहिर	श्री खींव सिंह सुल्ताना	11
ध्यान की शक्ति	आचार्य श्री महाप्रज्ञ	13
सती का सिंहनाद	श्री लोचन सिंह सिरसूं	15
इतिहास	सुश्री रश्मि रामदेरिया	17
राजनीति-कूटनीति	श्री गुमान सिंह धमोरा	18
महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा	श्री भँवर सिंह मांडासी	19
रामायण का विश्वव्यापी प्रसार और हम	ठा. भँवरसिंह रेड़ी	22
अच्छे दिन कब आएँगे?	श्री अजित सिंह कुणघेर	26
आदर्श और अनूठे गाँव	कर्नल हिम्मत सिंह	28
यात्रा	श्री अमर सिंह अकली	32
अपनी बात		34

समाचार संक्षेप

राष्ट्रनायक दुर्गादास जयन्ती :

वीर शिरोमणि, राष्ट्रनायक दुर्गादास जी की जयंती आंग्ल तिथि के अनुसार 13 अगस्त हो अनेक स्थानों पर हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। दुर्गादास जी का जीवन अत्यन्त प्रेरणादायी है। सच्चे क्षत्रिय के समस्त गुण उनके जीवन में रचे-बसे थे। औरंगजेब जैसे शत्रु से संघर्ष था पर साधनहीन होते हुए भी लगातार औरंगजेब की नींद हराम करते रहे। जोधपुर को पुन: प्राप्त कर लेने तक किसी प्रकार की शिथिलता नहीं आ सकी। बालक अजीतसिंह की सुरक्षा और उसका लालन-पालन करना कितना कठिन था जबकि चारों ओर शत्रु छा गये थे। बिछुड़े हुओं को धीरे-धीरे साथ लेना और शक्ति बढ़ाने के उपाय करते रहना उन विपरीत परिस्थितियों में कितना असम्भव-सा लगता है। पर दुर्गादास जी ने अपने त्यागमय जीवन से साथी भी जुटाए और अपनी कूटनीति से शत्रु के पुत्र तक को साथ मिलाया। विधर्मी और शत्रु परिवार के बच्चों को भी सुरक्षित रखना तथा उनकी मुस्लिम विधान की शिक्षा की व्यवस्था करना उनके ईश्वरीयभाव को ही प्रकट करता है। इतनी लम्बी अवधि के संघर्ष में भी उनके धैर्य को कोई डिगा नहीं सका! महाराजा जैसवंतसिंह जी की मृत्यु के पश्चात आए दायित्व को निभाने में अपने पौत्र को युद्ध में खोया, पुत्र घायल हुआ, पारिवारिक सुख का त्याग किया, यह क्षत्रिय के रूप में दान ही तो है। जोधपुर प्राप्त करने के बाद जोधपुर में शान्ति बनी रहे, इसके लिए अपनी इतनी लम्बी तपस्या से प्राप्त जोधपुर से भी दूर जाना पड़ा वह भी उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। जोधपुर से अलग महाराणा मेवाड़ व उनके पुत्र के बीच के मन-मुटाव को समाप्त करवाने, रामपुर की दुविधा मिटाने, रतलाम का संकट दूर करने जैसे कार्य भी करते रहे और क्षिप्रा के तीर अपने संघर्षमय जीवन को विराम दिया।

13 तारीख को खींवसर (नागौर) में बड़े पैमाने पर जयन्ती का आयोजन हुआ, जिसमें माननीय भगवानसिंह जी पहुँचे। संघशक्ति प्रांगण में प्रात:कालीन शाखा में जयन्ती मनाई गई। पूर्व संध्या पर फतेहाबाद (हरियाणा) में दुर्गादास जयन्ती मनाई गई। हिम्मत राजपूत छात्रावास डीडवाना में भी बड़े पैमाने पर जयन्ती समारोह का आयोजन हुआ जिसमें केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह व महावीरसिंह सरवड़ी पहुँचे। भीलवाड़ा जिले के शिवरती में संघप्रमुख माननीय लक्ष्मणसिंह जी के सान्निध्य में जयन्ती समारोह मनाया गया। चित्तौड़गढ़ में आसपरा माताजी स्थित भवानी क्षत्रिय धर्मशाला में मनाये गये जयन्ती समारोह में भी संघप्रमुखश्री का सान्निध्य मिला। बीकानेर जिले के डूंगरगढ़ स्थित महेश भवन में, जयन्ती समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया।

जोधपुर स्थित श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभागीय कार्यालय 'तनायन' में माननीय संरक्षक श्री भगवानसिंह जी के सान्निध्य में जयन्ती कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सालवा कलां दुर्गादास जी का पैतृक गाँव है, वहाँ उनके स्मारक पर शाखा लगाकर स्वयंसेवकों ने जयन्ती मनाई। जोधपुर संभाग में बापिनी, नाहरसिंह नगर, खारिया खंगार, गोपालसर और जय भवानी नगर में भी जयन्ती कार्यक्रम आयोजित हुए। दौसा प्रान्त में महुआ राजपूत छात्रावास में, व बहड़खो में जयन्ती मनाई गई। शिव प्रान्त की भिंयाड़ स्थित मातेश्वरी शाखा में, गुड़ामालानी प्रान्त के बूठ गाँव में जयन्ती का आयोजन हुआ। चोहटन प्रान्त के सेड़वा मण्डल में भूपाल शाखा मैदान गंगासरा में, गुड़ामालानी प्रान्त के मीठड़ा, हाथीतला में

जयन्ती मनाई गई। चूरू जिले के राजलदेसर, भूकरका, नूवां में जयन्ती मनाई गई। सिरोही जिले के सिरोड़ी, लुणोल में; बालोतरा सम्भाग में हल्देश्वर, दुर्गादास छात्रावास बालोतरा, सेवनियाला, टापरा, गंगासर जाजवा, चांदेसरा, चिड़िया, कुण्डल तथा दुर्गादास छात्रावास समदड़ी में जयन्ती मनाई गई। सोजत के बगड़ीनगर में, लाडनूं प्रान्त के परावा में, अजमेर के सरवाड़ में, टोंक जिले के नटवाड़ा में, कल्याण छात्रावास सीकर में तथा बीकानेर के संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में मांसा मोती कंवर बालिका शाखा में जयन्ती मनाई।

संघ प्रमुख श्री का प्रवास :

4 अगस्त को डूंगरगढ़ क्षेत्र के कितासर में स्नेह मिलन कार्यक्रम को संघप्रमुखश्री का सान्निध्य मिला। उसी दिन बीकानेर में सहयोगियों से भेंट की तथा बीकानेर संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में वृक्षारोपण किया।

संघप्रमुख श्री ने 12 अगस्त को भीलवाड़ा स्थित कुंभा छात्रावास में शाखा के स्वयंसेवकों से चर्चा की। वहाँ से सल्यावड़ी गाँव पहुँचे और सहयोगियों से संवाद किया।

24 अगस्त को बघेरा में राव चन्द्रसेन जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई गई जिसमें संघप्रमुखश्री ने अपनी उपयोगिता बनाए रखना आवश्यक बताया और कहा कि हमारे ऐतिहासिक महापुरुषों से सदैव प्रेरणा लेते हुए अपनी उपयोगिता बनाए रखना है। पू. तनसिंहजी के जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त आयोजित कार्यक्रम में क्षत्रिय युवक संघ द्वारा अपना जीवन उपयोगी बनाने हेतु श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा किए जाने वाले प्रयास का वर्णन किया।

सम्पर्क यात्राएँ :

दिल्ली एन सी आर और साठा चौरासी (उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में 27 से 31 जुलाई तक गहन सम्पर्क किया गया। गाजियाबाद और वैशाली क्षेत्र से सम्पर्क अभियान की शुरुआत की गई। साठा चौरासी क्षेत्र के मतनावाली, छज्जपुर, चचोई, बिगेपुर आदि गाँवों में जन्मशताब्दी वर्ष सम्बन्धी चर्चा स्थानीय समाज बन्धुओं से की गई। आगे आलमपुर, सपनावत, समाना, कलौंदा, जारचा आदि गाँवों में सम्पर्क कर बड़ी संख्या में 28 जनवरी को पू. तनसिंह जी के जन्म शताब्दी कार्यक्रम में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया गया। बुलंदशहर क्षेत्र के पहासू और टिटोहा क्षेत्र में तथा सहारनपुर क्षेत्र में भी सम्पर्क किया गया।

गुजरात में सिद्धपुर प्रान्त के वागड़ी, वलासना, उनाद, जूना आस्पा, नवा अस्पा व गोरिसना गाँवों में 30 जुलाई को सम्पर्क किया गया। खोडियार प्रान्त में 6 अगस्त को सम्पर्क किया गया और अमरगढ, आंबला, पांचवड़ा, काटोडिया, सोनगढ़ आदि गाँवों में बैठकें की गई।

शताब्दी वर्ष हेतु शाखाएँ :

जन्मशताब्दी वर्ष के कार्यक्रम की जानकारी देने हेतु साप्ताहिक शाखाओं का आयोजन कई जगह किया गया। साथ में श्री क्षत्रिय युवक संघ सम्बन्धी जानकारी भी दी जाती रही। 6 अगस्त को अजमेर प्रान्त के अजगरी में, उसी दिन चित्तौड़ में असावरा माताजी में कार्यक्रम रहा। शिशवी (नाथद्वारा) में 13 अगस्त को, पिपलाज (केकड़ी) स्थित बायण माता मन्दिर में 20 अगस्त को, चित्तौड़ जिले के चामुंडा माता मंदिर (मुंडाडा) परिसर में भी 20 अगस्त को शाखा के माध्यम से जानकारी दी गई। चित्तौड़ जिले के ही

भीमपुरिया में 20 को तथा नेतावल खेड़ा में 24 अगस्त को शाखा का आयोजन रहा। राजसमंद जिले के कालीवास गाँव में तथा धंधुका में 12 अगस्त को शाखा मिलन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

अन्य कार्यक्रम :

चूरू जिले के तारानगर स्थित राजपूत छात्रावास में 12 अगस्त को स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ। रतनगढ में 20 अगस्त को, आलोक आश्रम बाडमेर में 16 अगस्त को, बेंगलुरू में 20 अगस्त को, लाडनू क्षेत्र में रसीदपुरा में 20 अगस्त को तथा अमर राजपूत छात्रावाल नागौर में 26 अगस्त को कार्यक्रम रहा जिसमें माननीय भगवानसिंह जी का सान्निध्य मिला।

मध्य गुजरात संभाग के क्षेत्र काणेटी में 6 अगस्त को तथा उसी दिन गाँधीनगर में प्रांतीय कार्य योजना बैठकें सम्पन्न हुई।

6 अगस्त को जयपुर में समाज की जिला स्तरीय चिंतन बैठक सम्पन्न हुई और 9 अगस्त को व्यापार मंडलों के राजपूत पदाधिकारियों की बैठक हुई।

30 जुलाई को राजपूत समाज भवन गोता में अहमदाबाद निवासी मातृशक्ति का सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ तथा 20 अगस्त को संघशक्ति प्रांगण में मातृशक्ति द्वारा तीज का त्योहार मनाया गया। आलोक आश्रम बाड़मेर तथा संघशक्ति में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। पाली जिले के खैरवा में जोर जी चांपावत की जयंती के अवहार पर शताब्दी वर्ष की चर्चा की तथा 20 अगस्त को चाँधन में कार्यक्रम रहा। ●

यह कैसी धर्म साधना

एक व्यक्ति ने किसी साधु से कहा,-'मेरी पत्नी धर्मसाधना में श्रद्धा नहीं रखती। यदि आप उसे थोड़ा समझा दें तो अच्छा होगा।'

साधु बोला-ठीक है। अगले दिन सवेरे ही वह साधु उसके घर गया। पति वहाँ नहीं था। साधु ने उसके विषय में उसकी पत्नी से पूछा। पत्नी ने कहा-'जहाँ तक मैं समझती हूँ वे इस समय चमार की दुकान पर झगड़ा कर रहे हैं।' पति पास के पूजा घर में माला फेर रहा था। उसने पत्नी की बात सुनी। उससे यह झूठ सहा नहीं गया। बाहर आकर बोला,-'यह बिल्कुल गलत है, मैं पूजा घर में था।' साधु हैरान हो गया। पत्नी ने यह देखा तो पूछा,-'सच बताओ कि क्या तुम पूजा घर में थे? क्या तुम्हारा शरीर पूजा घर में, माला हाथ में और मन और कहीं नहीं था?'

पति को होश आया। पत्नी ठीक कह रही थी। माला फेरते-फेरते वह सचमुच ही चमार की दुकान पर ही चला गया था। उसे जूते खरीदने थे और रात को ही उसने अपनी पत्नी से कहा था कि सवेरा होते ही खरीदने जाऊँगा। माला फेरते-फेरते वास्तव में उसका मन चमार की दुकान पर पहुँच गया था और चमार से जूते के मोल-तोल पर कुछ झगड़ा हो रहा था।

विचार को छोड़ो और निर्विचार हो जाओ तो तुम जहाँ हो वहीं प्रभु का आगमन हो जाता है।

चलता रहे मेरा संघ

(भवानी निकेतन, जयपुर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर-2023 में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर द्वारा 19.05.2023 को प्रदत्त प्रभात संदेश)

उपनिषद में लिखा है, जो ऋषियों ने भी अनुभव किया है कि, सत्य और ज्ञान हिरण्यमय पात्र से ढका हुआ है। हिरण्यमय का अर्थ है सोने का, स्वर्ण का, चमकदार। तो सत्य को कितना छुपा करके रखा गया है या छिपा हुआ है। हमारे प्राकृत मन और बुद्धि में वो सामर्थ्य नहीं है कि उस हिरण्यमय पात्र को हटा सके। हृतपुरुष का स्वभाव है शिशुभाव और शिशु सदैव किसी को समर्पण करता है। अपने आप पर भरोसा ना करके माँ पर, पिता पर, गुरु पर किसी पर निर्भर करता है। वो निश्चिंत रहता है। हम उस सत्य और ज्ञान को जो ढका हुआ है, उसको अपावृत्त करना चाहते हैं, उस पात्र को हटाना चाहते हैं जिसके नीचे.... जिसके अन्दर सत्य और ज्ञान छिपा रहता है, तो हम किसी विधि विधान से, किसी अनुष्ठान से अथवा आग्रह से उसको प्राप्त नहीं कर सकते, उसको नहीं हटा सकते। एकमात्र उपाय है करुण पुकार, कि हे परमेश्वर! जो सत्य है उसको तुमने छिपा दिया है और उसके बिना मैं संसार में भटक रहा हूँ और इसलिए उस पात्र को अपावृत्त कर दीजिए। वो शक्ति मुझ में नहीं है।

रविंद्र नाथ टैगोर ने गीतांजलि लिखी और उसके अंतिम अवतरण में उन्होंने लिखा कि मेरे मस्तक को अपनी चरण रज तक झुका दे। ऐसा नहीं कहा कि मैं झुका रहा हूँ। प्रार्थना की गई है-झुका दे। ऐसा ही भाव पूज्य तनसिंह जी ने साधना पथ की भूमिका में लिखा है। चाहे वेद के ऋषि हों, उपनिषद् के ऋषि हों, चाहे रविंद्र नाथ टैगोर हों, चाहे तनसिंह जी हों, यह बिना अनुभूति के नहीं कहा जा सकता। वो अनुभूति हमको यहाँ करनी है। यह तनसिंह जी का बताया हुआ सूत्र, तनसिंह जी के बताए हुए उद्देश्य और मार्ग पर चलकर के ही हम इसको प्राप्त कर सकते हैं और इसी से हमारे जीवन में सुख, समृद्धि और शांति आएगी जिसके हम उपासक हैं। अन्य कोई विधि की आवश्यकता नहीं है।

हमने कुछ शब्द सुने हैं-व्यष्टि, समष्टि और परमेष्टि। ये तनसिंह जी ने तीन आयाम बताए साधना के। हमारी व्यक्तिगत साधना, हमारी सामाजिक साधना और हमारे विश्वात्मा की साधना के साथ ईश्वर को प्राप्त करने की साधना। यह बहुत कठिन नहीं है, लेकिन सरल भी नहीं है। तो जो ढका हुआ है उसको अपावृत्त करने का हम ग्यारह दिन में प्रयास करेंगे। बौद्धिक होंगे, चर्चाएं होंगी, उनमें हम यदि चूक गए, ध्यान कहीं और रह गया, हमारे किसी साथी में उलझा रह गया, हमारी घर की याद में उलझा हुआ रह गया तो यह शिविर बर्बाद चला जाएगा। इसी तरह से यह जीवन भी बर्बाद चला जाएगा। एक-एक क्षण श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर का इतना महत्त्वपूर्ण है। जो शिक्षक, आपके घटनायक आपको कहें, उसकी पूर्णतया आज्ञा पालन करें। छोटा-सा सूत्र हमारे जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन, बदलाव ला सकता है। हम परमेश्वर से प्रार्थना करें। मैं श्री क्षत्रिय युवक संघ की ओर से आज के प्रभात में आप सबके लिए प्रार्थना करता हूँ। ●

समुद्र जैसी गहराई और गंभीरता धारण करने वाला ही श्रेष्ठ पुरुष है।

- जनक

गतांक से आगे

पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– चैनसिंह बैठवास

हमारा अतीत निसंदेह गौरवपूर्ण व जाज्वल्यमान रहा है। इस पर गौर करें और अपने अतीत में झाँक कर देखें तो पायेंगे–

कभी वेद विद्या की शक्ति से था जीता
कभी ज्ञान ध्यान और भक्ति से भी जीता
कभी जग को जीता सुशासन के द्वारा
प्रलय से न डूबा हमारा सितारा
बिना पंख ऊँची भरी थी उड़ाने।।
भुलाए न भूले, सदियों पुराने, याद आ रहे हैं बीते जमाने।।

अपने इस गौरवशाली अतीत को सम्बोधित करते पूज्य श्री तनसिंह जी ने जो कहा, उन्हीं की जुबानी–

''मेरे अतीत! तेरी एक लम्बी कहानी है। सृष्टि के आदिकाल में एक महान यज्ञ का अनुष्ठान हुआ था। युगों-युगों तक आहुतियाँ गिरती गई और ज्वालाएँ धधकती गई। इसी यज्ञ में अपना सब कुछ अर्पित करने की एक अद्भुत परम्परा को जन्म मिला। कभी एक स्वप्न के लिए, कभी किसी कबूतर के लिए, कभी किसी गाय के लिए, तो कभी मानव समुदाय के लिए तुमने मेरे पूर्वजों को स्वाहा किया, पर यह सारा बलिदान किसी भावुकता से प्रेरित न होकर एक निश्चित विचारधारा और शास्त्र से समर्थित होने के कारण धर्म का स्वरूप बन गया। इस यज्ञ की ज्वालाएँ कभी क्षीण हुई हों, इसका स्मरण ही नहीं होता। कभी सत्य सिद्धान्त का उपार्जन कठोर तपस्याओं, अचिन्त्य लोक संग्रह और अद्भुत भीष्म प्रतिज्ञाओं से हुआ तो कभी लपलपाती हुई तलवारों से रणांगणों में मर-मिटने की कामनाओं से हुआ। कभी आत्मसम्मान की रक्षा के लिए तिल-तिल कर मिटने की कहानियों में, कभी जलती हुई ज्वालाओं में जीवित ही भस्म होने की परम्पराओं ने, उस जीवन का सृजन किया जिसने मृत्यु के सभी बन्धनों को तोड़कर एक शाश्वत संजीवनी प्रवाहित कर दी।''

पूज्य श्री तनसिंह जी के कथन से यह तो स्पष्ट है कि क्षत्रिय का प्राण अपने स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि परमार्थ के लिए होता है। जिस प्रकार अर्जुन की दृष्टि चिड़िया की आँख पर टिकी थी, उसी प्रकार क्षत्रिय की दृष्टि सदैव परमार्थ पर टिकी हुई है। वह अपने नाशवान शरीर का मोह रखे बिना परमार्थ के इन पाँच हेतुओं के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करता आ रहा है। ये हेतु हैं– (1) राष्ट्र की रक्षा के लिए, (2) शत्रु के नाश के लिए, (3) धर्म की रक्षा के लिए, (4) अधर्म के नाश के लिए और (5) शरणागत की रक्षा के लिए।

सत्य की रक्षा के लिए राज्य, धन, सम्पत्ति, पत्नी, पुत्र और स्वयं अपने शरीर को बलिदान कर देने वाले हरिश्चन्द्र अतिथि के स्वागतार्थ अन्न का सप्रेम दान देने वाले रन्तिदेव, याचक की इच्छापूर्ण करने के लिए अपने पुत्र तक के शरीर पर खंग चला सकने वाले मयूरध्वज, शरणागत के परित्राणार्थ अपने देह का माँस तक तोल देने वाले शिवि, एक गाय की रक्षा के लिए अपने कोमल कान्त तरुण कलेवर को क्रूर व्याघ्र का ग्रास बनाने के लिए प्रस्तुत दिलीप, प्रजा के एक व्यक्ति को भी प्रसन्न रखने के लिए अपनी प्राणप्रिया परम पतिव्रता अर्द्धांगिनी को वनवास देने की कठोरता दिखला सकने वाले राम, ऐसे-ऐसे आदर्शों से जिसके इतिहास के पृष्ठ भरे पड़े हैं, जिनका ऐसा स्वर्णमय इतिहास है, वह कौम कट-जायेगी लेकिन झुकेगी नहीं, उसने सत्य और न्याय की राह कभी छोड़ी नहीं और अपने लक्ष्य की ओर अबाध गति से आगे बढ़ती रही। अन्याय, अत्याचार और अन्धकार को युगों तक काटती रही, यही इस कौम

की परम्परा है। हमारे इस गौरवपूर्ण अतीत का कारण है हमारी क्षात्र परम्परा जो कभी क्षीण नहीं हुई, सदैव अक्षुण्ण बनी रही।

इस गौरवशाली परम्परा के सम्बन्ध में पूज्य श्री तनसिंह जी ने कहा–

''दूसरों के लिए अपने आपको निःशेष रूप से खपा देने के पीछे बलि होने का भाव, बलि होने की परम्परा तथा शस्त्र और साधन से भी कहीं अधिक बलवान आत्म बल है। इसी आत्म बल के कारण इके दुक्के व्यक्तियों ने संसार के नये इतिहास बना डाले और जातियों के भविष्य बदल डाले। बलि होने का भाव, बलि होने की परम्परा व आत्म बल का सम्बन्ध हमारे अन्तर्जगत से है। क्षात्र भाव केवल विचार से नहीं, भाव-धारा से सम्भव है। त्याग, बलिदान, उत्सर्ग भावधारा के बिना सम्भव नहीं। भाव का जहाँ अभाव है, वहाँ क्षात्र भाव पनप ही नहीं सकता। समाज के लिए त्याग करने की बात समाज के लिए उत्सर्ग करने की बात, माता-पिता, भाई, पुत्र आदि के लिए त्याग करने की बात भाव धारा बिना सम्भव नहीं। भाव धारा का स्रोत हृदय है।''

अपनी इस गौरवपूर्ण व जाज्वल्यमान क्षात्र परम्परा पर विचार करते हुए पूज्य श्री तनसिंह जी ने कहा–

''आज जब मैं शान्त होकर तुम पर विचार करता हूँ, तो लगता है, जिस शान्ति के लिए अहिंसा की शिक्षा दी जा रही है, वह न जाने कितनी ही बार कवियों की कविताओं से, ऋषि-मुनियों के उपदेशों से और स्वयं तथागत भगवान बुद्ध से दी जा चुकी है किन्तु कभी एक क्षण के लिए भी किसी ने तुम्हारी राहें नहीं बदली। जिस किसी ने तुम्हें बदलने की चेष्टा की वही बदल गया। तुम मेरे भिखारी समाज की वह पूर्व सम्पत्ति हो जिसे उपार्जित करने के लिए न जाने कितने धनिकों ने अपने सभी प्रकार के धन को लुटा कर भिखाारी बनना स्वीकार किया। जब कभी मैं तुम्हारी इस गौरवशाली परम्परा का चिन्तन करता हूँ तो लगता है यदि कभी जन्म लूँ तो इसी भिखारी जाति में ही जन्मूं। यदि कुछ कहूँ तो इसी समाज की गौरव-गाथा कहता रहूँ और यदि सोचूँ तो केवल यही कि वह कौनसा धन है जिसके आने के बाद मैं भिखारी नहीं रहूंगा। हाथियों का दान देने वाले जब उनके बांधने के रस्सों के लिए रोते हैं तो तुम अनायास ही याद आ जाते हो, पर तुम कब आओगे? यह निमन्त्रण से सम्भव है अथवा किसी और कर्मठ प्रक्रिया से, बस इस सत्य के उपार्जन पर ही मैंने अपना जीवन सर्वस्व दाव पर लगाया है।''

हमारी क्षात्र परम्परा की गाड़ी सदाचरण, सत्याचरण, उत्सर्ग, परोपकार, बलिदान इत्यादि के पथ पर सदियों से अविराम अबाध गति से अपने लक्ष्य की ओर निरंतर आगे बढती जा रही थी। क्षात्र परम्परा को मिटाने, उसकी गति को रोकने हेतु तरह-तरह के अवरोध आते गये पर रुकी नहीं, पर आज क्षात्र परम्परा की वही गाड़ी **व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा** और **आपसी ईर्ष्या व द्वेष की भेंट** चढ़ गयी और पथविचलित हो भोग-विलास के पथ पर चल पड़ी है, जिसके कारण हमारे भीतर जमे संस्कार, नैतिक आदर्श, परोपकारिता, हमारी संस्कृति लुप्त होती जा रही है और पाश्चात्य संस्कृति हमारी मानसिकता पर हावी हो रही है।

हमारे इस गौरवपूर्ण अतीत का आधार बलि होने की परम्परा व आत्म बल था, जो अब निःशेष होने जा रहा था जिसके अभाव ने पूज्य श्री तनसिंह जी के भीतर अन्तर्वेदना पैदा की। पूज्यश्री की इस अन्तर्वेदना से एक संकल्प जगा। यह संकल्प 22 दिसम्बर, 1946 को श्री क्षत्रिय युवक संघ के जन्म का कारण बना। श्री क्षत्रिय युवक संघ ने सुप्त क्षात्र शक्ति को जगाने, भूले पथिकों को फिर से स्वधर्म का पाठ पढ़ाने और निस्तेज होती अपनी क्षात्र परम्परा को पुनः अक्षुण्ण बनाने के लिए सामूहिक संस्कारमयी कर्म-प्रणाली के माध्यम से क्षत्रियों में क्षत्रियत्व के गुणों को विकसित करने का दुरूह कार्य अपने हाथ में लिया।

हमारी लुप्त होती क्षात्र परम्परा के सम्बन्ध में पूज्य श्री तनसिंह जी ने बताया–

''हमारी शिक्षण पद्धति की कुछ मौलिक आवश्यकताएँ हैं जो पूरी नहीं की जा रही हैं। **पहली आवश्यकता** यह है कि **किसी कार्य को परिणाम से नहीं, कार्य करने की भावना से ही आँका जाता है,** पर दुर्भाग्यवश आजकल की पद्धति में यह फैशन हो गया है और परिणाम देखकर कार्य का निर्णय करते हैं। समस्या है हमारी मनोवैज्ञानिक कमजोरियों की और परिस्थितियों के आगे पर्याप्त आत्म बल के अभाव की, इसलिए **दूसरी आवश्यकता है आत्म बल और आत्म विश्वास का शिक्षण।** शिक्षण की उस मूलभूत कमी को पूरी करना मुझे ही पड़ेगा।''

''विचारों की दृष्टि से अतीत से वर्तमान तक के मार्ग में मुझे कुछ परिवर्तन करने पड़े हैं और वे परिवर्तन कुछ ठोकरें खाने के बाद अनुभवों के आधार पर किये गये हैं जो मुझे उत्तरोतर सत्य की ओर प्रेरित होने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।''

''मेरे पास अब कुछ भी नहीं है। अपने आस-पास के वातावरणा को प्रभावित करने के जो प्रचलित साधन हुआ करते हैं, उनमें से एक भी मेरे पास नहीं है। न धन, न सहयोग, न आकर्षक विचारचारा और न महत्त्वाकांशी सहयोगी। मेरे वर्तमान तेरे निर्माण के पीछे मेरा श्रम और श्रद्धा यह दो महत्त्वपूर्ण तत्व रहे हैं और मैं सोचता हूँ श्रम और श्रद्धा के सहारे ही कोई भविष्य बना सकता है।''

''**अथक परिश्रम** और **अपने प्रति अटूट विश्वास** ही मेरे इस जीवन की अमूल्य निधियाँ हैं। अपने प्रति अटूट विश्वास ही मुझे दूसरों के प्रति अटूट विश्वास पैदा करता है और वही मुझे श्रद्धा की उपयोगी शिक्षा देता है। श्रद्धा, जो आज के युग में बड़ा ही विवादास्पद गुण है, किन्तु विषम परिस्थितियों में ऐसा सम्बल और कोई हो नहीं सकता। जब अपने पराये हो जाते हैं, अपने सारे प्रयत्न विफल या अपर्याप्त हो जाते हैं और जब जीवन में असहायावस्था का भान होता है तब केवल श्रद्धा ही सहायता जुटा सकती है और जुटाती आई है।''

''हमने एक विशिष्ट, सुदृढ और कारगर तर्क प्रणाली का आश्रय लिया है। यह आरोप हो सकता है कि मेरी प्रणाली बड़ी कष्ट साध्य है किन्तु बड़ी जिम्मेदारी उठाने के लिए यह आवश्यक है कि हर व्यक्ति को सहन करना सिखाया जाये। उनकी समस्त मान्यताओं को झकझोर दिया जाये। उसके विश्वासों और श्रद्धा को इतना हिला दिया जाये ताकि यह सिद्ध हो सके कि वह सभी विपरीत परिस्थितियों में आगे बढ़ने के लिए सशक्त और बलवान व्यक्ति है। बिना कष्ट पाये कोई पुरुष महापुरुष नहीं बन सकता। बिना गरम हुए कोई पदार्थ गर्मी नहीं पहुँचा सकता और इसीलिए मेरे भाई बन्धुओं को बड़ी कठिन साधना में गुजरना पड़ता है। प्रत्येक स्वर्ण को अग्नि में तपाया जाना पड़ता है अन्यथा मान्यताओं और साधना में कोई अन्तर ही नहीं रहेगा। हाँ इस दृष्टिकोण से मैं जल्लाद ही नहीं बड़ा बेरहम जल्लाद हूँ। प्रत्येक बलि होने वाले की बलि के लिए तैयार हूँ फिर उसे अपने बन्धनों में बांध कर मुक्त होने की छुट्टी देता हूँ। पींजड़े में डालकर अपनी शिकार से खेल खेलता हूँ और जब शिकार करता हूँ तो मगरमच्छ की तरह आँसू बहाता हूँ, लेकिन मेरा कोई शिकार बलि होने के बाद भी यह नहीं कहेगा कि वह बलि हुआ है। कहेगा तो यही कि जल्लाद फँसता जा रहा है, गहरा और गहरा! हम सब के उत्तरदायित्व उस पर चढ़ते जा रहे हैं। लोग जिस जीवन को बर्बाद होना कहते हैं हम उसी में आबाद हो रहे हैं। बन्दों के कुटुम्ब बना रहे हैं और यह कुटुम्ब बढ़ता ही जा रहा है-बढ़ता ही जा रहा है।''

पूज्य श्री तनसिंह जी का कारवां अपने लक्ष्य की ओर बढ़ चला और बढ़ता जा रहा है यानी हमारी क्षात्र परम्परा की गाड़ी पुनः चल पड़ी है और हम अपने लक्ष्य की ओर बढ रहे हैं।

अलविदा दुनिया के लोगों ठहर हम सकते नहीं।
दूर मंजिल का निमन्त्रण राही पा रुकते नहीं।।
ये चरण ये खेह चाहे, भूल जायेगी जहाँ!!

(क्रमशः)

सिंध शासक-दाहिर

- खींवसिंह सुल्ताना

हर्ष के शासनकाल में सिंध प्रदेश हर्ष के साम्राज्य का एक महत्त्वपूर्ण प्रान्त था। हर्ष के बाद सिंध प्रदेश स्वतंत्र राज्य के रूप में अस्तित्व में आया। आठवीं सदी के प्रारम्भ तक सिंध राज्य एक विस्तृत राज्य में बदल चुका था जो उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में अरब सागर तक, तथा पूर्व में कन्नौज से पश्चिम में मकरान तक विस्तृत था। उत्तर पश्चिम की ओर इसमें वर्तमान बलुचिस्तान का अधिकांश भाग शामिल था। सातवीं शताब्दी में पारसियों के आक्रमण और राजनीतिक अस्थिरता ने सिंध को कमजोर कर दिया था। परन्तु नवीं सदी के उत्तरार्ध 679 ई. में दाहिर सेन जब सिंध का शासक बना तो उसने सिंध को पुनः शक्तिशाली बनाने का कार्य प्रारम्भ किया।

दाहिर सेन एक शक्तिशाली शासक था जिसने राज्य में राजनैतिक स्थिरता स्थापित की और सैन्य बल को भी मजबूत बनाया। सिंध राज्य के सीमित संसाधनों के कारण राज्य की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थी। राज्य की अर्थव्यवस्था को ठीक करने व राज्य की आय में वृद्धि के लिये दाहिर सेन ने कुछ कठोर नीतियाँ लागू की जिसके कारण राज्य के कुछ प्रभुत्वशाली व्यक्ति असंतुष्ट होकर दाहिर सेन के विरुद्ध अवसर की प्रतीक्षा करने लगे। प्राचीन काल से ही भारत तथा अरब के मध्य व्यापारिक सम्बन्ध थे परन्तु इस्लाम धर्म स्वीकार करने के बाद अरबों के दृष्टिकोण में बड़ा परिवर्तन आ गया था। अब उनका उद्देश्य व्यापार-वाणिज्य से अधिक धर्म का प्रचार हो गया था और वो भड़ौच, देवल तथा मकरान पर लगातार आक्रमण करते रहे।

प्रारम्भिक असफलताओं के बाद आठवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मकरान पर अधिकार करने पर अरबों को सफलता मिल गयी। मकरान पर अधिकार को उन्होंने सिंध विजय का मार्ग माना। इराक के अरब गवर्नर हज्जाज ने खलीफा उमर से सिंध पर आक्रमण के लिए अनुमति प्राप्त की। इस्लामी इतिहासकारों ने इस आक्रमण का कारण बताया है कि खलीफा के कुछ विद्रोहियों (जो कि उसी के परिवार के सदस्य थे) ने सिंध में शरण प्राप्त कर रखी थी और खलीफा द्वारा विद्रोहियों को माँगने पर भी राजा दाहिर ने शरण में आए शरणागतों को लौटाने से इन्कार कर दिया, साथ ही लंका से आने वाले कुछ समुद्री जहाजों को देवल के समुद्री डाकुओं ने लूट लिया था। इराक के गवर्नर हज्जाज ने राजा दाहिर से डाकुओं को दण्डित करने व क्षतिपूर्ति की माँग की जो कि सिंध की सम्प्रभुता को चुनौती थी, दाहिर ने इन माँगों को ठुकरा दिया।

हज्जाज ने सबसे पहले अपने सेनानायक उबैदुल्लाह को सिंध विजय के लिए भेजा। राजा दाहिर के युद्धकौशल व वीरता के समक्ष अरबों को पराजय का सामना करना पड़ा और उबैदुल्लाह युद्धक्षेत्र में मारा गया। इस पराजय से आक्रोशित हज्जाज ने अपने दूसरे सेनानायक बुर्दल के नेतृत्व में दूसरा सैन्य अभियान सिंध के विरुद्ध भेजा। इस अरब सेना को भी दाहिर के समक्ष पराजय का सामना करना पड़ा और उनका सेनानायक बुर्दल युद्ध में मारा गया। इन दोनों पराजयों से चिन्तित हज्जाज ने अपने सेनानायक मुहम्मद-बिन-कासिम को एक विशाल सेना के साथ सिंध पर आक्रमण के लिए भेजा। सिन्ध

पर यह तीसरा आक्रमण 712 ई. में हुआ। सीमावर्ती क्षेत्रों को विजित करता हुआ मुहम्मद-बिन-कासिम राजधानी की ओर बढ़ा। इस दौरान उसे दाहिर से असंतुष्ट सिन्ध के कुछ प्रभुत्वशाली वर्गों व बौद्ध संघों का सहयोग मिला। दूसरी दाहिर की सेना संख्या तथा संसाधनों में अरबों से अत्यधिक कम थी। मातृभूमि की रक्षा के लिए दाहिर अरबों के आक्रमण का सामना करने के लिए रावर नामक स्थान पर पहुँचा। 20 जून, 712 ई. को दोनों सेनाओं के मध्य घमासान युद्ध हुआ। अपनी वीरता से सिन्ध की सेना ने अरब सेना में हाहाकार मचा दिया परन्तु संख्या में अत्यधिक कम होने के कारण अन्त में सिंध की सेना को पराजय का सामना करना पड़ा। राजा दाहिर वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

दाहिर के वीरगति प्राप्त करने के बाद दाहिर सेन की पत्नी रानी बाई ने अरबों का प्रतिरोध किया। रानी बाई ने किले के भीतर से आक्रमणकारियों के विरुद्ध मोर्चा सम्हाला तथा अरब सेना को भारी नुकसान पहुँचाया। लगभग छह माह तक उनका यह प्रतिरोध जारी रहा, परन्तु सीमित संसाधनों व रसद सामग्री के अभाव में किले की रक्षा असम्भव हो गयी तब रानी बाई के नेतृत्व में वीरांगनाओं ने जौहर व्रत सम्पन्न किया।

भीतरी और बाहरी सम्पदा

एक महर्षि थे। उनका नाम था कणाद। किसान जब अपना खेत काट लेते थे तो उसके बाद जो अन्न-कण पड़े रह जाते थे, उन्हें बीन करके वे अपना जीवन चलाते थे। इसी से उनका यह नाम पड़ गया था।

उन जैसा दरिद्र कौन होगा। देश के राजा को उनके कष्ट का पता चला। उसने बहुत-सी धन सामग्री लेकर अपने मंत्री को उन्हें भेंट करने भेजा। मंत्री पहुँचा तो महर्षि ने कहा,-''मैं सकुशल हूँ। इस धन को तुम उन लोगों में बाँट दो जिन्हें इसकी जरूरत है।''

इस भान्ति राजा ने तीन बार अपने मंत्री को भेजा और तीनों बार महर्षि ने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया।

अन्त में राजा स्वयं उनके पास गया। वह अपने साथ बहुत-सा धन ले गया। उसने महर्षि से प्रार्थना की कि वे उसे स्वीकार कर लें। किन्तु वे बोले,-'उन्हें दे दो, जिनके पास कुछ नहीं है। मेरे पास तो सब कुछ है।'

राजा को विस्मय हुआ। जिसके तन पर एक लंगोटी मात्र है। वह कह रहा है कि उसके पास सब कुछ है। उसने लौटकर सारी कथा अपनी रानी से कही। वह बोली,-'आपने भूल की। ऐसे साधु के पास कुछ देने के लिये नहीं, लेने के लिये जाना चाहिए।'

राजा उसी रात महर्षि के पास गया और क्षमा माँगी।

कणाद ने कहा-'गरीब कौन है, मुझे देखो और अपने को देखो। बाहर नहीं, भीतर। मैं कुछ भी नहीं माँगता, कुछ भी नहीं चाहता। इसलिए अनायास ही सम्राट हो गया हूँ।'

एक सम्पदा बाहर है, एक भीतर है। जो बाहर है, वह आज या कल छिन ही जाती है। इसलिए जो जानते हैं, वे उसे सम्पदा नहीं, विपदा मानते हैं। जो भीतर है, वह मिलती है तो खोती नहीं। उसे पाने पर फिर कुछ भी पाने को नहीं रह जाता।

●

ध्यान की शक्ति

– आचार्य महाप्रज्ञ

ध्यान एक अजूबा बना हुआ है। ध्यान करने वाले को विशेष माना जाता है। ऐसा लगता है कि ध्यान हमारे जीवन का अभिन्न अंग नहीं है, वह कोई विशेष साधना है। सच्चाई यह है कि यह जीवन का स्वाभाविक क्रम है। ध्यान कोई बाहर से आया हुआ तत्त्व नहीं है, यह जीवन की पूरी पद्धति है। ध्यान न करने वाले की जीवन-पद्धति में और ध्यान करने वालों की जीवन पद्धति में अन्तर होगा। दोनों की जीवन-पद्धतियाँ समान नहीं हो सकतीं।

हम ध्यान को एक जीवन-पद्धति के रूप में स्वीकार करें। ध्यान से हमारे जीवन का समूचा क्रम बदल जाता है। यदि ध्यान करने से जीवन की चर्या न बदले, मान्यताएँ और धारणाएँ न बदलें, स्वभाव और आदतें न बदलें तो फिर ध्यान करने का कोई विशेष अर्थ समझ में नहीं आता।

हर आदमी बदलता है। दुनिया में एक भी ऐसा आदमी नहीं, जो न बदले। जो लोग बहुत रूढ़िवादी हैं, न बदलने की धारणा रखते हैं और यह घोषणा करते हैं कि सारी दुनिया बदल जाए, हम कभी नहीं बदलेंगे, वे भी बदलते हैं। उन्हें भी बदलना पड़ता है।

बदलना दो अवस्थाओं में होता है। एक है परिस्थिति से बदलना और दूसरा है विवेक से बदलना। परिस्थिति से बदलना बाध्यता से बदलना है। विवेक से बदलना सहज भाव से बदलना है। बदलना दोनों है, पर दोनों में आकाश-पाताल का अन्तर है।

जब व्यक्ति ध्यान की स्थिति से गुजरता है तब उसमें शक्ति जागती है, प्राणशक्ति का विकास होता है और यह शक्ति उसे स्थिर बनाती है। हजारों प्रभाव आते हैं, पर वह डोलता नहीं। बड़े-बड़े तूफान और बवंडरों से पर्वत नहीं डोलता, वृक्ष डोल जाते हैं, धाराशायी हो जाते हैं। पर्वत में इतनी स्थिरता आ गई कि वह डोलता नहीं।

पानी की तीन अवस्थाएं होती हैं-तरल, बर्फ और भाप। तीनों एक ही हैं। इनमें कोई मौलिक अन्तर नहीं है। जब पानी गाढ़ा होता है, तब बर्फ बन जाता है और पानी जब एक बिन्दु पर पहुँचकर उबलता है, तब भाप बन जाता है। पानी तरल होता है, बर्फ गाढ़ा होता है और भाप उड़नशील होती है। वह आकाश में उड़ जाती है, पता ही नहीं चलता। पानी से बर्फ का मूल्य ज्यादा है और बर्फ से भाप का मूल्य ज्यादा है।

चित्त की भी तीन अवस्थाएँ हैं। एक है पानी की तरह तरल, दूसरी है बर्फ की तरह गाढ़ी और तीसरी है भाप की तरह उड़नशील। जब चित्त पानी की तरह तरल होता है, तब उसमें सब कुछ मिल सकता है, मिश्रण हो सकता है। पानी में जो भी आएगा, वह उसमें घुल-मिल जाएगा। यही बात तरल चित्त के विषय में होगी। जब चित्त तरल होता है, तब वह प्रत्येक प्रभाव से प्रभावित होता रहता है। जब पानी बर्फ बन जाता है, तब उसमें घुलनशीलता नहीं होती। जो भी डाला जाएगा, वह नीचे लुढ़क जाएगा। उसके साथ आत्मसात् नहीं हो पाएगा। यही बात गाढ़ चित्त के विषय में है।

ध्यान एक प्रक्रिया है चित्त को गाढ़ बनाने की। ध्यान के द्वारा चित्त गाढ़ा बन जाता है, बर्फ जैसा बन जाता है। इस अवस्था में वह किसी भी प्रभाव से प्रभावित नहीं होता। प्रभाव आता है, टकराता है और नीचे लुढ़क जाता है। यह कभी सम्भव नहीं है कि प्रभाव न आए, पर यह संभव है कि चित्त उसे स्वीकार करे या न करे। जब तक चित्त को ध्यान के द्वारा गाढ़ा नहीं बना दिया जाता, तब तक आने वाले प्रभावों से हमारी मुक्ति नहीं हो सकती।

ध्यान चित्त को स्थिर बनाता है। जब चित्त स्थिर बनता है, तब आदमी प्रभावों से मुक्त हो जाता है।

आज हिंसा की समस्या बहुत उग्र रूप धारण कर रही है। युद्ध छिड़ते रहते हैं, लड़ाइयाँ भड़कती रहती हैं। एक ही मानव-समाज में जीने वाले लोग परस्पर एक-दूसरे

को मारने लग जाते हैं । एक आदमी किसी दूसरे की हत्या करता है और अपराध प्रमाणित होने पर उसे न्यायालय से आजीवन करावास या फाँसी का दण्ड मिलता है। एक आदमी को मारने पर यह सजा और उधर युद्ध के मैदान में एक सैनिक यदि अनेक सैनिकों को मौत के घाट उतार देता है तो उसे 'महावीर-चक्र' जैसे पुरस्कार मिलते हैं और वह सम्मानित किया जाता है। खुले में मारने वाला अपराधी नहीं माना जाता और छिपे-छिपे मारने वाला अपराधी माना जाता है।

जीवन की यह पद्धति इसलिए विकसित हुई कि आदमी ध्यान करना नहीं जानता। जब तक आदमी ध्यान करना नहीं जानता, तब तक वह समता को नहीं जानता। समता को जाने बिना इस जीवन-पद्धति से छुटकारा नहीं हो सकता। इससे छुटकारा तब मिल सकता है जब आदमी ध्यान करना सीखे। ध्यान के द्वारा जीवन में समता का विकास होगा, समता से राग-द्वेष-मुक्त चेतना जागेगी।

ध्यान का मूल अर्थ है-राग-द्वेष-मुक्त चेतना का अनुभव। जब तक राग-द्वेष-मुक्त चेतना का अनुभव नहीं होता, तब तक समता का अवतरण नहीं होता और जब तक समता का अवतरण नहीं होता तब तक सामायिक नहीं होती और जब तक सामायिक नहीं होती, तब तक जीवन की पद्धति नहीं बदल सकती।

जीवन-पद्धति भी दो प्रकार की होती है। एक जीवन-पद्धति है कांटो वाली और दूसरी जीवन-पद्धति है फूलों वाली। जो लोग राग-द्वेष-मुक्त चेतना को नहीं जगाते, समता का अभ्यास नहीं करते, सामायिक की उपासना नहीं करते, वे अपनी सुरक्षा के लिए कांटे लगाते हैं। वे चारों ओर शस्त्रों का अंबार लगाते हैं, उन्हें सुरक्षा का साधन और भय मुक्ति का कारण मानते हैं।

शस्त्रों से सुरक्षा नहीं होती । एक के पास कांटा है तो दूसरे के पास उस कांटे को तोड़ने वाला दूसरा बड़ा कांटा है। इस कांटों की दुनिया में कोई कांटा सबसे बड़ा नहीं है। हर कांटा छोटा होता है, जब उसके सामने बड़ा कांटा आकर खड़ा हो जाता है। इन कांटों को समाप्त किया जा सकता है, फूलों के विस्तार के द्वारा। हमारी जीवन-पद्धति फूलों की पद्धति बने। वह ध्यान, समता और राग-द्वेष-मुक्त चेतना के द्वारा ही संभव हो सकती है।

जिस व्यक्ति ने ध्यान किया है, जिसने चित्त को निर्मल बनाने की साधना की है, उसकी तीनों आँखें खुल जाती हैं। कितना बड़ा लाभ होता है। तीनों आँखें बराबर काम करने लग जाती हैं। वह प्रत्येक कार्य को करते समय शरीर को देखता है, मन को देखता है और भावना को देखता है, तीनों को देखता है। फिर यह निर्णय करता है कि यह कार्य लाभप्रद है या नहीं? यह कार्य करूँ या नहीं? कर्तव्य और अकर्तव्य का निर्णय पुस्तकों के आधार पर नहीं हो सकता। वह निर्णय हो सकता है अपनी निर्मल चेतना के आधार पर। निर्मल चेतना का जागरण होता है, ध्यान के द्वारा। जब आदमी ज्ञाता और द्रष्टा बनता है, तब उसकी निर्मल चेतना जागती है। जब निर्मल चेतना का जागरण होता है तब भोक्ता बनना कठिन होता है, ज्ञाता-द्रष्टा बनना सरल होता है। जब तक निर्मल चेतना नहीं जागती, तब तक भोक्ता बनना सरल होता है, ज्ञाता द्रष्टा बनना कठिन होता है। ध्यान का उपयोग है ज्ञाता-द्रष्टा बनना। इसका तात्पर्य है, हर घटना को जानना-देखना किन्तु उसको भोगना नहीं। यह स्थिति ध्यान साधक के लिए सहज बन जाती है। जब ध्यान की चेतना नहीं जागती, एकाग्रता और निर्मलता का अभ्यास नहीं होता, उस स्थिति में भोगना सरल होता है। कोई भी घटना घटती है और व्यक्ति उसे भोगने लग जाता है, उसके प्रभाव से प्रभावित हो जाता है।

इस सारे सन्दर्भ में जब हम ध्यान पर विचार करते हैं तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि आज के युग को इसकी अपरिहार्य आवश्यकता है। इसका कारण बहुत स्पष्ट है। आज का आदमी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक बीमारियों से ग्रस्त हैं क्योंकि वह शारीरिक (फिजिकल), मानसिक (मेण्टल) और भावनात्मक (इमोशनल) इन तीनों प्रकार के तनावों से पीड़ित है। आज ये तीनों जितनी प्रचुर मात्रा में हैं, उतनी मात्रा में पहले नहीं थी। ध्यान के द्वारा ही इनसे छुटकारा पाया जा सकता है।

●

''सती का सिंहनाद''

– लोचन सिंह सिरसूं

अकबर वेष बदलकर मीना बाजार को निहार रहा था। जिस प्रकार भंवरा एक कली से दूसरी कली पर मंडराता है, उसी तरह अकबर की निगाहें भी एक नवयौवना से दूसरी नवयौवना के सौंदर्य को निहार रहीं थीं।

इतने में एक नवयौवना का बाजार में प्रवेश हुआ? अकबर उसके रूप व लावण्य पर मंत्रमुग्ध हो गया, एवं उसको पाने के लिए लालायित हो उठा। तुरन्त ही अपने महल में जाकर विश्वासपात्र सैनिकों को उसे अपने हरम में लाने का हुक्म दिया।

संध्या हो चुकी थी। धीरे-धीरे सभी स्त्रियाँ मीना बाजार से जा चुकी थीं। केवल वह नवागता ही पालकी की प्रतीक्षा में बैठी-बैठी अपने प्राणनाथ (पति) को कोस रही थी। 'इतना समय बीत जाने पर भी पालकी क्यों नहीं भेजी''-विचार कर ही रही थी, कि एक पालकी उसके सामने रखी गई। कहारों को भला-बुरा कहते हुए वह पालकी में बैठ गई। कहारों ने पालकी उठाई, और शीघ्रता से चलने लगे। नवयौवना ने पालकी के पर्दे से झाँका, तो रास्ता अनजान नजर आया। उसने पूछा,-''यह कौनसा रास्ता है?'' ''देर हो जाने के कारण आपको सीधे रास्ते से ले जा रहे हैं,'' कहारों ने जवाब दिया। थोड़ी देर बाद पालकी अकबर के हरम के सामने थी।

युवती पालकी से बाहर आकर देखती है। उसे सब कुछ अनजान दिखता है। न ही खुद के महल एवं न ही प्राणनाथ नजर आए। कुछ अनिष्ट होने का सोचकर एक बार तो घबराई, किंतु तुरन्त अपने क्षात्रत्व को जगया। ''कोई चिंता नहीं! मैं एक क्षत्राणी हूँ। राजपूत की पुत्री और राजपूत की ही वधू! मैंने क्षत्राणी का दूध पिया है। मेरी नाड़ियों में राजपूत के रुधिर की धारा बह रही है। मैं मेवाड़ के हिंदूसूर्य महाराणा प्रताप के भाई शक्ति सिंह की पुत्री और कविवर पृथ्वीराज की धर्मपत्नी हूँ । है कौन नराधम! जो जीवित रहते मेरे तन को स्पर्श कर सके। एक राजपूतानी अपने घर में एक सुकुमारी व अबला हो सकती है, पर अवसर आने पर सिंहनी बनकर साक्षात् शक्ति चण्डी का रूप धारण कर सकती है। हे अशरण शरण भगवान! मुझे बल दो, जिससे मैं इस प्रपंच से अपने को बचा सकूँ। वीर बप्पा रावल, कुम्भा और मेवाड़ के सिंहासन की मान-मर्यादा बचा सकूँ।''

कमरे में खड़ी-खड़ी उसने अपनी ईष्ट, अपने राज्य की कुलदेवी को याद किया। उसे अपने ईष्ट पर पूर्ण विश्वास था। जहाँ ईष्ट है, तो श्रेष्ठ है। ईष्ट नहीं, तो भ्रष्ट है। इतिहासकार भी मानते हैं, कि ईष्ट देवी, उस किरण कंवर के शरीर में प्रविष्ट हो गई, वरना एक औरत, अकबर का मुकाबला नहीं कर सकती थी।

तभी पास वाले कमरे से पाँवों की आहट सुनाई दी, और किरण सतर्क हो गई। साहस भरी आवाज में ललकार उठी-''कौन आ रहा है?''

''तुम्हारे ऊपर अपना सर्वस्व अर्पण करने की चाह रखने वाला, बादशाह अकबर।'' अकबर बोला।

''एकांत में आने का तुम्हारा क्या प्रयोजन है? मेरी और क्यों बढ़ रहा है?''

''जिस अकबर के नाम से पूरा हिंदुस्तान कांपता है, आज वही तुम्हारा गुलाम है। उसे प्रेमदान देकर प्रसन्न करो। वह तुम्हारी रूप राशि का भिक्षुक है।''-कहता हुआ अकबर किरण की ओर बढ़ा।

बिजली की फुर्ति से किरण ने अकबर को नीचे गिराया, एवं उसकी छाती पर बैठकर तुरन्त छिपाई हुई कटार को हाथ में उठाकर कड़कती आकज में गरजी,- ''कायर! तूने मीना बाजार में इससे पूर्व न जाने कितनी मृगनयनियों को अपने जाल में फंसाया होगा? कितनी सती-साध्वियों का सतीत्त्व नष्ट किया होगा? मीना बाजार में तूने और कुछ नहीं, केवल नवयोवनाओं का कौमार्य चुराया । अरे पापी! इधर देख! आज मेरी यह चमचमाती कटार तेरे खून की प्यासी हो उठी है। शीघ्र ही यह तेरे पेट की आंतड़ियाँ बाहर निकालने वाली व तेरी गर्दन को काटने वाली है। मैं तेरे आश्रित राजा पृथ्वीराज की पत्नी हूँ। क्या तू बप्पा रावल के वंशधरों की वीरता के कारनामें नहीं जानता? क्या तुझसे भारत की राजपूतानियों का विमल चरित्र छिपा हुआ है? ठहर पापी! इस पैनी कटार से तुरंत ही तेरा काम तमाम करके परलोक पहुँचा देती हूँ। जिस क्षत्राणी के रूप-लावण्य की तुझे प्यास थी, वह प्यास अब इस विषबुझी कटार से बुझाती हूँ।''

अकबर किरण कंवर का वह सिंहनी रूप देखकर एवं गर्जना से सहमकर अपने प्राणों की भीख माँगने लगा। अपना भेद खुल जाने एवं प्राण पंखेरू के भय से थर-थर कांपने लगा, एवं फर्श पर पड़े-पड़े कराहता हुआ बोला-''मुझे बख्श दो, बहिन! अभी से मैं तुमसे माँ-बहिन का भाव रखता हूँ, प्रतिज्ञा करता हूँ कि भविष्य में कभी ऐसी चेष्टा नहीं रखूंगा। मीना बाजार बंद कर दूँगा। आज से ऐसे सभी कुकारनामों से तौबा! तौबा! तौबा!''

सिंहनी तुरन्त उसकी छाती से हटकर कटार को म्यान में रखकर लाल नैत्र किए खड़ी हो गई। अकबर ने तुरन्त डर के मारे बाहर जाकर अपनी पालकी से उसे उसके अपने महल पहुँचाया। वीर रमणी ने अपने सहित सैकड़ों अबलाओं के कौमार्य एवं सतीत्व को बचा लिया। अकबर के मीना बाजार का पर्दा फाश हो गया, व तुरन्त ही बंद करना पाड़ा।

धन्य हो किरण कंवर! आज भी तुम्हारे जैसी वीर क्षत्राणियों की सीख लेकर क्षत्राणियाँ मर्यादा में रहकर अपना शीश गौरव से उठाए हुए है।

''धन्य रजपूतानी! धन्य।''

एक बार एक सन्त से किसी सज्जन ने पूछा कि यहाँ से 10 मील की दूरी पर स्थित एक गाँव तक पहुँचने में मुझे कितना समय लगेगा? संत चुप रहे। सज्जन व्यक्ति ने सोचा कि संत ने मेरी बात सुनी नहीं, इसलिए दूसरी बार वही बात पूछी। पर संत इस बार भी मौन रहे।

तब सज्जन व्यक्ति अपने गंतव्य स्थान के लिये रवाना हो गये। वे दस बीस कदम ही बढे होंगे कि संत ने चिल्लाकर जोर से कहा-'दो घण्टे में पहुँच जाआगे।' सज्जन व्यक्ति को बड़ा आश्चर्य हुआ और वापिस संत के पास आकर कहा कि जब मैंने आपसे पूछा तब तो बताया नहीं और अब जब मैं निराश होकर रवाना हुआ तब आप मेरे प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं।

संत ने कहा-'मुझे तुम्हारी चाल के बारे में ज्ञान नहीं था। अब जब तुम चले तो तुम्हारी चाल देखी तब अनुमान लगाया कि दो घण्टे लगेंगे।' सज्जन व्यक्ति संतुष्ट हुए। हमारी लगन, तत्परता, निष्ठा कैसी है, इसी से लक्ष्य प्राप्ति सम्बन्धी अंदाजा लगाया जा सकता है। ●

इतिहास

– रश्मि रामदेरिया

यहाँ घास की रोटी से, वैभव ने हार मानी
इस धरती में गूंज रही, जीवन की अमर कहानी
वह थाती ना गुमाना, महान हल्दी घाटी की
जागो...जागो!

निश्चित रूप से हमारा गौरवमय इतिहास हमें बहुत प्रेरणा देता है, हमें इस पर गर्व होना चाहिए, किंतु इतना ही प्रयाप्त नहीं है। अब तो–

'सोचो मत शुरुआत करो, वादा मत करो, साबित करो, और खाली डींगें मत हांको, करके दिखाओ।' हमारे पूर्वजों ने यह संदेश हमारे लिए ही छोड़ा है :–''महाराणा के भाले से लेकर आल्हा की तलवार तक, बुंदेलखण्ड की माटी से लेकर केसरिया बाना पहने मेवाड़ तक। परशुराम की तरह फरसे से शीश काट धरा पर फैंकूंगा, जैसे धोए कपड़े को निचोडूं, दुश्मन को भी वैसे ही निचोडूंगा।''

क्षात्रधर्म को निभाने वाले, शीश कटने पर भी दोनों हाथों में तलवार लिए धड़ से लड़ते थे, और दिखता कहीं पाप और अन्याय उन्हें, शेरों की भाँति टूट पड़ते थे। देवों–सी शान, हिमालय से भी ऊँचा मान और गौरवमयी मर्यादा के इतिहास को पुरखों ने हमें अभयदान के रूप में दिया था। क्षत्रिय–क्षत्राणी वो है, जो दूसरों को क्षय से बचाएं। सूर्य एवं चंद्र वंश, क्षत्रियों की वंश परम्परा के मूल स्रोत हैं। अपने धर्म के लिए पूर्ण रूप से समर्पित क्षत्रिय अद्भुत साहस, पराक्रम, सर्वहित चिंतन, सृष्टि के समस्त प्राणियों एवं व्यवस्था की रक्षा, अस्त्र–शस्त्र में निपुण व युद्ध पारंगत आदि गुणों के लिए जाना जाता है। क्षत्राणियाँ भी आगे बढ़कर अपने पति व पुत्रों को तिलक लगाकर युद्ध के लिए भेजती थी, एवं खुद जौहर करती थी। आवश्यकता पड़ने पर युद्ध के लिए भी तैयार रहती थी।

भगवान श्री राम से लेकर दुर्गादास तक, देवासुर संग्राम में देवताओं की भी मदद करने वाले, क्षत्रिय ही थे। मनुस्मृति एवं गीता में भी ऐसे क्षत्रिय वीरों का उल्लेख है, एवं क्षत्रिय राजकुमार को 'महात्मा राजपुत्रोयं' कहा गया है। अधर्म के विरुद्ध युद्ध करना ही उनका स्वधर्म या स्वकर्म कहा गया है। काम, क्रोध, लोभ या द्रोह से उन्हें स्वधर्म का त्याग करना नहीं सुहाता था। मध्ययुग में जहाँ जौहर की चिताओं में अग्नि की भयंकर लपटों का आलिंगन क्षत्राणियों ने किया, तो क्षत्रिय वीरों ने केसरिया पहनकर शत्रु को सिंह–व्रत का स्वाद चखाया।

इतिहास उन्हीं का लिखा जाता है, जिनका जीवन मेहनत, बलिदान, त्याग, संघर्ष, धैर्य, जुनून एवं विश्वास से परिपूर्ण हो। 1191 के युद्ध में पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गौरी को हराया, तो 1582 में महाराणा प्रताप ने अकबर की सेना को। अजमेर, नागौर, सिवाणा, जालोर, रणथम्भोर, चितौड़, कुंभलगढ़, हल्दीघाटी, दिवेर आदि के युद्ध हुए। राजा भोज, हर्षवर्धन, बप्पा रावल, राणा–संगा, रावल रतन सिंह, वीर दुर्गादास, अमर सिंह राठौड़, मान सिंह, जय सिंह, बाबा रामदेव, रानी लक्ष्मी बाई, दुर्गावती आदि का गौरवमय इतिहास रहा। लेकिन इतना होते हुए भी,–

आपस में लड़े भई, गैरों ने हमें कुचला।
अब मिलकर मरने का, अरमान लिए फिरते हैं।
इतिहास की चोटों का, इक दाग लिए फिरते हैं।

हमारी आपसी फूट, अहंकार, विश्वासघात, पुरानी युद्ध नीति, समाज चरित्र की जगह व्यक्तिगत चरित्र को ज्यादा महत्त्व देकर शत्रु को बार-बार क्षमा कर देना आदि हमारे पतन के कारण रहे।

''धन्य धन्य वह धरा, जहाँ पर,
शक्ति, भक्ति और स्वाभिमान कभी बिका नहीं।
धन्य है वह राणा प्रताप
जिसके आगे अकबर टिका नहीं।
क्या सीना था, फौलादी उनका,
तीर टकराकर टूट जाते थे।
हिनहिनाता था जब चेतक तो,
मुगलों के छक्के छूट जाते थे।।
ऐसा केसरिया उड़ाया राणा ने,
सूर्यदेव छिप गए गगन पर।
क्षत्रिय तो क्षत्रिय, एक घोड़े ने,
जान दे दी स्व वतन पर।।
जब-जब तेरी तलवार उठी,
दुश्मन की टोली डोल गई।
फीकी पड़ी दहाड़ सिंह की
जब-जब तू ने हुंकार भरी।।

जय क्षात्र धर्म!

राजनीति-कूटनीति

– गुमानसिंह धमोरा

नेताओं द्वारा बार-बार इस तरह से वाक्यांश कहे जाते हैं ''फलाना राजनीति कर रहा है''। ऐसा कहना राजनीति शब्द का दुरुपयोग है। राजनीति देश अथवा राज्य के हित में उसकी निर्धारित नीति होती है जिसे सरकार द्वारा देश हित अथवा अहित को मद्देनजर रख प्रजातंत्र में बहुमत से तय की जाती है। किसी एक या दो नेताओं द्वारा राजनीति तय नहीं की जा सकती।

राज्य संचालन के लिये 'कूटनीति' का सहारा भी लिया जाता है। कूटनीति को राज्य के हित को ध्यान में रखते हुए गोपनीय रखा जाता है, जब तक कि वह कार्यरूप में परिणित न हो जाये। (किन्तु कूटनीति का निर्णय भी राज्य के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के समूह द्वारा बहुमत के आधार पर लिया जाता।)

देश व राज्य की नीति देश हित में सरकार द्वारा द्वारा साम, दाम, दण्ड, भेद तरीके अपना कर निर्धारित की जानी चाहिए-पार्टी अथवा व्यक्तिगत स्वार्थवश नीति निर्धारण निन्दनीय व अक्षम्य है।

अब आते हैं ''राजनीति हो रही है अथवा कर रहा है'' जैसे आरोपों के विश्लेषण पर-

ऐसे वाक्यों में राजनीति नहीं ''कुटिल नीति'' शब्द उपयोग में लेना चाहिए जो राजनीति से बिल्कुल भिन्न हैं व स्वार्थ के वशीभूत ही किया गया कर्म है।

गतांक से आगे

महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा

– भँवरसिंह मांडासी

संत संग

सन् 1929 ई. में द्वारिका पीठ के पद्च्युत शंकराचार्य जगद्गुरु स्वामी विक्रम तीर्थ अजमेर में काफी समय तक रहे थे। उक्त समय उनका कई बार खरवा आगमन भी हुआ। वे धर्मशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान माने जाते थे। उनसे राव गोपालसिंह ने दीक्षा ली थी। उनके पुत्र गणपत सिंह ने दीक्षा ग्रहण तो नहीं की किन्तु उनके सान्निध्य में काफी रहे और धार्मिक चर्चाओं में भाग लिया। पुष्कर स्थित खरवा के श्री बद्रीनारायण जी के मंदिर में स्वामीजी दो मास तक विराजे और राव गोपाल सिंह ने उनके साथ वहीं रहकर साधना की। उनकी साधना में कुछ गलती हुई या क्रिया उनके अनुकूल न बैठी और उनकी तबीयत खराब हो चली। चक्कर ज्यादा आने लगे और जी घबराने लगा। उसी समय दर्शन शास्त्र के अद्वितीय विज्ञान एवं यौगिक क्रिया के ज्ञाता परमहंस जी महाराज पुष्कर में लम्बे समय से निवास कर रहे थे-उन्होंने कोई उपचार बताया, जिसके परिणामस्वरूप कुछ दिनों में स्वास्थ्य में सुधार आया। तत्पश्चात परमहंस जी महाराज दीर्घकाल तक पुष्कर स्थित बद्रीनारायण जी के मंदिर में रहे थे। लेखक ने भी उनके दर्शन किए थे। किन्तु उनके नाम की जानकारी नहीं है। परमहंस जी नाम से ही उन्हें जानता रहा।

इसके अतिरिक्त अन्य अनेक महात्माओं एवं साधु सन्तों से राव गोपालसिंह का सम्पर्क बना रहता था। स्वामी भगवदानन्द सरस्वती, जो आसामी बाबा के नाम से ज्यादा प्रसिद्ध थे, ब्यावर शहर के बाहर एक बगीची में रहा करते थे। वे साधना में शाक्त थे एवं तान्त्रिक भी माने जाते थे। प्राय: राव गोपालसिंह से मिलने वे खरवा डाक-बंगले पर आया करते थे। वे दर्शन-शास्त्र के भी प्रकाण्ड विद्वान थे। धौलपुर-ग्वालियर क्षेत्र के प्रसिद्ध सन्त बाबा रामदास जिन्हें धौलपुर के राणा भी सम्मान देते थे, राव गोपाल सिंह पर पूर्ण कृपा रखते थे। जहाँ ठहरते थे वहाँ रात-दिन रामधुन चलती रहती थी। टाट बाबा का नाम भी उन दिनों खूब प्रसिद्ध था। पुष्कर आने पर वे जोधपुर घाट के पीछे स्थित श्मशान भूमि में रहते थे। बीकानेर जाने पर वे देशनोक के नेड़ी जी स्थान पर तपते थे। अन्य भी अनेक अज्ञात सन्त, ब्रह्मचारी और परमहंस महात्मा रमते राम की भाँति खरवा डाक-बंगले पर चले आते थे, जिनसे मिलकर राव गोपालसिंह परम आल्हादित हो उठते थे। ऐसे सभी महात्माओं को ईश्वर का रूप मानकर वे हृदय से पूजते थे।

सामाजिक गतिविधियाँ

सामाजिक सुधार के क्षेत्र में राव गोपालसिंह आर्य समाजी विचारधारा से प्रभावित थे। शाहपुरा (मेवाड़) के राजकुमार और बाद के राजाधिराज उम्मेदसिंह, पाड़लिया के ठाकुर गोवर्धनसिंह, अजमेर के दीवान बहादुर हरविलास शारदा और चाँदकरण शारदा आदि के साथ समाज सुधार के कार्यों में उन्होंने हार्दिक सहयोग किया।

राजपूतों में शिक्षा प्रचार-प्रसार के वे शुरू से ही पक्षपाती थे। सन् 1915 ई. में राजनैतिक संकटों से जूझने से पूर्व के दस बारह वर्षों में राजपूतों में शिक्षा प्रचार हेतु उन्होंने जो उल्लेखनीय कार्य किए उनका सविस्तार उल्लेख इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में किया जा चुका है। राजस्थान क्षत्रिय महासभा से वे हमेशा जुड़े रहे। वहाँ भी उन्होंने राजपूतों में शिक्षा के

विस्तार पर ही अधिक बल दिया। 15 जुलाई, 1922 ई. को ''संयुक्त प्रान्तीय क्षत्रिय सभा'' का अधिवेशन लखनऊ में सम्पन्न हुआ। वहाँ के क्षत्रियों के आमन्त्रण पर राव गोपाल सिंह लखनऊ गये और उन्हें उक्त अधिवेशन का सभापति बनाया गया। वहाँ पर भी उन्होंने क्षत्रियों की तत्सामयिक अनेक कठिनाइयों पर बोलते हुए समाज में शिक्षित युवक तैयार करने पर अधिक जोर दिया। अजमेर मेरवाड़ा के क्षत्रिय उन्हें मार्गदर्शक मानते थे।

रावत मेहरातों में कार्य

''मेर'' मेरवाड़ा के प्राचीन निवासी थे। उनके मेर या माहिर नाम के कारण ही इस भू-भाग का नाम मेरवाड़ा प्रसिद्ध हुआ। मेर और मीणों के उद्‌गम और विकास के संदर्भ में पुरातत्व के अधिकारी विद्वानों में अनेक शोधपूर्ण लेख लिखे हैं। यद्यपि उनके मत और मान्यताएँ विभिन्न हैं। जिन पर यहाँ चर्चा करना अभिष्ट नहीं है।

जब से शाकम्भरी के चौहानों का प्रभुत्व राजस्थान के इस विस्तृत भू-भाग पर स्थापित हुआ तब से ही इस लेख का संदर्भ शुरू होता है। शाकम्भरी यानी सांभर के चौहान। राजा वाक्पतिराज के अनेक पुत्रों में एक लक्ष्मणराज था जो राव लाखण के नाम से प्रसिद्ध हुआ। विक्रमी संवत् एक हजार के प्रारम्भिक काल में पिता तथा भाईयों से किसी कारणवश नाराज होकर उसने सांभर त्याग दी और 'मेर' बाहुल्य इस दुर्गम स्थान पर आकर ''चाँग'' गाँव में रहने लगा। उसने वहाँ रहते हुए एक मेर महिला से विवाह किया। उसकी मेर पत्नी से उत्पन्न पुत्र पितृपक्ष से चौहान कुलोद्‌भव होते हुए भी अपने मातृकुल पक्ष के नाम पर ''मैरात'' कहलाया। राव लाखण मेरों की सहायता से गौड़वाड़ प्रान्त जीतते हुए नाडोल तक पहुँच गया। नाडोल का स्वतंत्र शासक बनकर वहाँ राज्य करने लगा। चाँग चितारा का प्रदेश उसके मेर पुत्रों के अधिकार में बना रहा। राठौड़, भाटी, गहलोत आदि राजपूत कुलों के वे व्यक्ति जो अपने कौटम्बिक भाइयों से विद्रोह करके अथवा हत्या आदि के अपराध करके फरार हो गये थे-अपने सगे-सम्बन्धी चौहानों के पास इस अभयप्रद सुरक्षित पहाड़ी क्षेत्र में आ बसे। कालान्तर में शनैः शनैः उन राजपूत कुलों और यहाँ के आदिवासी मेर क्षत्रियों में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हुए और उनसे उत्पन सन्तानें रावत मैरात के नाम से प्रसिद्ध हुई।

भारतवर्ष में मुस्लिम शासन की स्थापना (वि.स. 1250-1300) के पश्चात अधिकांश मैरातों ने जो महरात कहलाते थे। मुस्लिम सम्पर्क के प्रभाव से इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया, परन्तु उनमें से जिन लोगों ने हिन्दू धर्म नहीं छोड़ा, उन्होंने अपनी पहचान अलग बनाए रखने के लिए 'रावत' नाम से अपने को प्रसिद्ध किया। रावत उस काल में राजपूतों की एक शासकीय उपाधि थी। वे लोग अपने पुरुखों के धर्म (हिन्दू धर्म) पर दृढ़ बने रहे। धर्म परिवर्तन के बावजूद भी रावत-महरात रक्त-सम्बन्ध के कारण एक दूसरे के समीप थे। उनमें विवाह सम्बन्ध निर्विवाद होते रहे और वे एक दूसरे को एक ही वंश से निकले भाई और सगे-सम्बन्धी मानते रहे। हिन्दू जाति की सर्वधर्म समन्वय नीति ही उन संस्कारों के मूल में निबद्ध थी। धर्म परिवर्तन के पश्चात भी महरातों को अपने राजपूती रक्त का अभिमान सदैव बना रहा और अपने को चौहान कहने में वे गौरव का अनुभव करते रहे। रावत तो अपने को हिन्दू धर्मावलम्बी राजपूत मानते रहे किन्तु सामाजिक सुधारों के लिए वे हमेशा लालायित बने रहे।

खरवा, मेरवाड़ा में स्थित एक प्रमुख संस्थान था। इन रावत महरातों में खरवा के शासकों को समय-समय पर सैनिक सहायता दी थी। राव गोपालसिंह ने इस वीर जाति की पतितावस्था को

देखा। उनमें हिन्दु आचार-विचार और संस्कारों को पुन: जागृत करने के उन्होंने अनेक उपाय किये। गाँव-गाँव में उपदेशक भेजे, खुद भी उन दुगर्म पहाड़ियों में बसे गाँवों में घूमे व ग्रामीणों से सम्पर्क किया। उन्हें उनके असली स्वरूप का बोध कराया। उनके सुप्त स्वाभिमान को जागृत करने के लिए खरवा के पुरोहित मोड़सिंह, देवगढ़ के मेघसिंह और बारहठ रिड़मलदान आसिया समय-समय पर मेरवाड़ा के गाँवों में जाते और उनके मुखियाओं से मिलते रहते थे। उन्हें अपने आचार-विचार सुधारने के लिए समझाया करते थे। रावत महरातों में आज जो स्वाभिमान की भावना जागृत हुई है और सामाजिक स्तर पर उन्होंने जो उन्नति की है, उसके मूल में राव गोपालसिंह की प्रेरणा और प्रयास ही निहित हैं। इस कार्य को सर्वप्रथम प्रारम्भ करने वाले अग्रणी के रूप में राव गोपाल सिंह रावत राजपूत भवन की नींव के पत्थर थे। सन् 1947 ई. में मेरवाड़ा के प्रमुख स्थान सैंदड़ा में होने वाले रावत-राजपूत सम्मेलन में भाषण करते हुए जोधपुर राज्य के महाराजा हनुवन्तसिंह जी में कहा था-''आज से कई वर्ष पूर्व इस महान कार्य को आरम्भ करने वाले एक राव गोपाल सिंह जी खरवा को मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, जिन्होंने सर्वप्रथम रावत-राजपूतों को अपना पूर्व गौरव स्मरण कराकर उन्हें सच्चा मार्गदर्शन दिया था।'' मेरवाड़ा के रावत-महरात आज भी राव गोपालसिंह जी का नाम श्रद्धा से याद करते हैं।

साभार 'राज गोपालसिंह खरवा'

लेखक-सुरजनसिंह झाझड़

(क्रमश:)

अमृतत्व की किरण

एक राजा था। वह एक दिन अपने वजीर से नाराज हो गया और उसे एक बहुत बड़ी मीनार के ऊपर कैद कर दिया। एक प्रकार से यह अत्यन्त कष्टप्रद मृत्युदण्ड ही था। न तो उसे कोई भोजन पहुँचा सकता था और न उस गगनचुम्बी मीनार से कूदकर उसके भागने की कोई सम्भावना थी।

जिस समय उसे पकड़कर मीनार पर ले जाया रहा था, लोगों ने देखा कि वह जरा भी चिंतित और दुखी नहीं है। उल्टे सदा की भाँति आनंदित और प्रसन्न है। उसकी पत्नी ने रोते हुए उसे विदा दी और पूछा-'तुम इतने प्रसन्न क्यों हो?'

उसने कहा-'यदि रेशम का एक बहुत पतला सूत भी मेरे पास पहुँचाया जा सकता तो मैं स्वतंत्र हो जाऊँगा। क्या इतना-सा काम भी तुम नहीं कर सकोगी?'

उसकी पत्नी ने बहुत सोचा, लेकिन इतनी ऊँची मीनार पर रेशम का पतला धागा पहुँचाने का कोई उपाय उसकी समझ में न आया। तब उसने एक फकीर से पूछा। फकीर ने कहा-'भृंग नाम के कीड़े को पकड़ो। उसके पैर में रेशम के धागे को बाँध दो और उसकी मूंछों के बालों पर शहद की एक बूंद रखकर उसका मुँह चोटी की ओर करके मीनार पर छोड़ दो। उसी रात को ऐसा किया गया। वह कीड़ा सामने मधु की गंध पाकर, उसे पाने के लोभ में, धीरे-धीरे ऊपर चढने लगा और आखिर उसने अपनी यात्रा पूरी कर ली। रेशम के धागे को एक छोर कैदी के हाथ में पहुँच गया। रेशम का यह पतला धागा उसकी मुक्ति और जीवन बन गया। उससे फिर सूत का धागा बाँधकर ऊपर पहुँचाया गया। फिर सूत के धागे से डोरी और डोरी से मोटा रस्सा। उस रस्से के सहारे वह कैद से बाहर हो गया।

सूर्य तक पहुँचने के लिये प्रकाश की एक किरण बहुत है। वह किरण किसी को पहुँचानी भी नहीं है। वह तो हर एक के पास मौजूद है। ●

रामायण का विश्वव्यापी प्रसार और हम

– ठा. भँवरसिंह रेड़ी

हम क्षत्रियों के लिए यह एक अत्यन्त स्वाभिमान और हर्ष का विषय है कि ''रामायण'' वह पवित्र ग्रन्थ है जिसमें इक्ष्वाकुवंश के श्री रामचन्द्र जी के जीवन की घटनाओं का वर्णन है। जिसमें जीवन की समग्रता का बोध होता है। इस रामायण में पाठक, श्रोता और दर्शक तीनों प्रकार के व्यक्तियों को आदर्श एवं व्यवहार का लौकिकता और अलौकिकता का तथा काम-अर्थ, धर्म-मोक्ष का तथा ज्ञान व भक्ति का समन्वित ज्ञान प्राप्त होता है।

वे भगवान रामचन्द्र हमारे क्षत्रियों में ही हो चुके हैं जिनकी जीवन-गाथा को विश्व भर में लोग मस्तक पर धरे फिरते हैं तथा इनकी जीवन लीला का नाट्य प्रदर्शन दशहरा के दिनों में करना व इसका पठन व श्रवण करना जीवन में अमृत वटी का कार्य स्वीकार करते हैं। अत्यन्त पवित्र रामकथा वस्तुतः जीवन के सब पाप-ताप, दुःख दारिद्र और संकटों को हरने वाली है।

दशहरे के पवित्र पर्व पर तो इसका महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है। दशहरा असुरता के प्रतीक रावण के वध व संस्कृति की प्रतीक सीता माता की रक्षा का उद्घोष है। यह अधर्म का नाश व धर्म की स्थापना का प्रतीक है। नवरात्र को दुर्गा पूजा के बाद इस त्योहार की स्थिति और भी विशिष्ट रूप प्रदान करती है। दशहरा का शाब्दिक अर्थ दस सिर हरण (नष्ट) करने वाला होता है। कई विद्वान इसको दशविध पाप को हरण करने वाली या दस जन्म कृत पाप का नाश करने वाली तिथि भी कहते हैं।

वास्तव में पाप ही जीवन को कष्टमय दरिद्रवान, शोक-सन्तप्तवान व रोग युक्त बनाता है। महर्षि शुक्राचार्य रचित शुक्र नीति में दस प्रकार के पाप इस प्रकार बताये गये हैं :

1. हिंसा (किसी की हत्या या कष्ट पहुँचाना), 2. स्तेय (चोरी करना), 3. अन्यथा काम (अवैध मैथुन), 4. पैशुन्य (चुगलखोरी), 5. निष्ठुर भाषण (कटुवचन), 6. अनृत (झूठ बोलाना), 7. भेदवार्ता व्यापार (भेदवार्ता से हृदय विदीर्ण), 8. अविनय (विनयहीनता), 9. नास्तिकता (आस्थाहीनता), 10. अवैध आचरण (शास्त्र विरुद्ध आचरण)

दशहरे में भक्ति भाव से किया गया राम कथा का वाचन या श्रवण मानव को उक्त सभी पापों से छुटकारा दिला देता है। इससे मानव को आन्तरिक शान्ति की प्राप्ति होती है। मानव जीवन के समग्र विकास का रास्ता स्पष्ट हो जाता है। इससे मनुष्य को एक विशेष प्रकार के सन्तोष की अनुभूति होती है।

इसकी इसी अद्‌भुत विशेषता के कारण यह भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि विश्व के कोने-कोने में लोकप्रिय होती जा रही है। मलेशिया, इंडोनेशिया, थाइलैण्ड, चीन, फ्रांस, इंग्लैण्ड तथा अमेरिका तक में इसका प्रसार व प्रचार हो चुका है तथा रामायण का विदेशी भाषाओं में प्रकाशन भी हो चुका है। विदेशी लोग रामायण या रामलीला का मंचन बड़ी उत्सुकता से देखते हैं तथा कीर्तन आदि का आयोजन करके विशेष प्रकार की आनन्दानुभूति प्राप्त करते हैं।

उपरोक्त सभी देश कभी हमारे (भारत के) सांस्कृतिक उपनिवेश होते थे। हमारे भारत का अतीत काल अत्यन्त गौरवशाली था। भारत जगत का गुरु कहलाता था। जैन, सिक्ख, बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम आदि सभी धर्म शताब्दियों पूर्व ही किसी न किसी महापुरुष द्वारा स्थापित किये गये हैं। जैसे जैन धर्म स्वामी महावीर, बौद्ध धर्म बुद्ध, सिक्ख धर्म गुरु नानक, ईसाई धर्म ईसा मसीह व इस्लाम धर्म मोहम्मद

साहब द्वारा स्थापित किया गया था लेकिन हमारा हिन्दू धर्म तो सनातन है। प्रकृति प्रारम्भ से निरन्तर चलता आ रहा है। यह किसी व्यक्ति विशेष द्वारा स्थापित नहीं है।

रामायण एक आदर्श परिवार के सभी आदर्श सदस्यों के आदर्श जीवन की झाँकी है। इसमें माता-पिता, पति-पत्नी, स्वामी-सेवक, भाई-भाई, भाई-बहिन, देवर-भोजाई को परस्पर कैसा मर्यादित जीवन व्यतीत करना चाहिए इसको कार्यान्वित व्यवहारिक जीवन में उतार कर दिखाया गया है। और विदेशों में इसकी महत्ता को समझा है व स्वीकार किया है। चाहे मुस्लिम हो चाहे ईसाई, सिक्ख हो, चाहे जैन, सभी ने इसको स्वीकारा है। विदेशों में इसकी भलक निम्न प्रकार देखी जा सकती है-

1. थाईलैंड :- थाइलैंड के सांस्कृतिक व धार्मिक जीवन में रामायण छा रहा है। थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में एक विशाल बौद्ध मन्दिर है जिसमें नीलम की विशाल मूर्ति है। इसे देखने दूर-दूर के लोग आते हैं। इस मंदिर की दीवारों पर सम्पूर्ण रामकथा का चित्रण है। इस देश की ''करामकियेन'' अपनी रामायण है जिसके रचियता नरेश राम प्रथम बताये जाते हैं। तथा वर्तमान में शासक उन्हीं के वंशज राम नवम् बताये जाते हैं।

राजधानी बैंकॉक में एक विशाल राष्ट्रीय संग्रहालय है। उसमें प्रवेश करते ही धनुर्धारी राम के दर्शन होते हैं। रामकथा थाईलैंड वासियों के रोम-रोम में इस प्रकार पच चुकी है कि उन लोगों की यह मान्यता बन चुकी है कि रामायण की सभी घटनाएँ हमारे देश में ही घटित हुई थी। क्योंकि थाइलैंड में भी अयोध्या व लवपुरी (लोयबुरी) नामक स्थान हैं। वहाँ के शास्त्रीय नृत्य में रामकथा के दर्जनों प्रसंग दर्शाये जाते हैं यह वहाँ पर राम की लोकप्रियता का जीवन्त प्रमाण है।

2. कम्बोडिया :- यहाँ ''अंगकोरवाट'' राम के महत्त्व का जीता-जागता उदाहरण है। यह दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा प्रतीक है। यहाँ बुद्ध, शिव, विष्णु, राम आदि सभी भारतीय देवों की मूर्तियाँ पाई जाती हैं। इस मन्दिर का निर्माण ग्यारहवीं सदी में सूर्यवर्मन द्वितीय ने कराया था। इस मन्दिर के कई भाग हैं। अंगकोरवाट, अंगकोरथाम, वेयोन आदि। अंगकोरवाट में रामकथा के अनेक प्रसंग दीवारों पर उत्कीर्ण हैं। जैसे सीता की अग्नि परीक्षा, अशोक वाटिका में रामदूत हनुमान आगमन, लंका में राम रावण युद्ध, बाली-सुग्रीव युद्ध आदि। थाइलैण्ड की तरह यहाँ की भी रामायण अपनी रामायण है जिसका नाम है 'रामकेर' जो थाई रामायण से बहुत मिलती जुलती है।

3. इंडोनिशिया :- इंडोनेशिया में भी रामायण की लोकप्रियता उल्लेखनीय है। यहाँ चाहे बाली का हिन्दू हो चाहे जावा का मुसलमान हो, दोनों ही राम को अपना राष्ट्रीय महापुरुष मानते हैं। ये लोग राम सम्बन्धी ऐतिहासिक तथ्यों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर समझते हैं। जोग जाकर्ता से लगभग 25 किलोमीटर की इस दूरी पर स्थित प्रावंनन का मन्दिर इस बात का प्रमाण है। इसकी प्रस्तर भीतियों पर सम्पूर्ण रामकथा उत्कीर्ण है। इस द्वीप का वातावरण पूर्णत: राम मय है।

4. मलेशिया :- मलेशिया में भी रामायण का व्यापक प्रभाव है। यहाँ एक विशेष परम्परा के अन्तर्गत चमड़े की पुतलियों के माध्यम से रामलीला की भाँति रामायण प्रसंग दिखाये जाते हैं। यहाँ की रामायण का नाम है ''हेकायत सेरीरामा'' इसमें भी राम को विष्णु का अवतार माना है, सिंहल द्वीप के कवि नरोत्तम दास ने जानकी हरण काव्य की रचना की थी। अब इसका अनुवाद सिंहली भाषा में भी हो चुका है।

5. फ्रान्स :- 1839 में रामचरित मानस के सुन्दरकाण्ड का फ्रांसीसी भाषा में फ्रांसीसी विद्वान 'गार्सादतासी ने अनुवाद किया था। और इसी प्रकार पेरिस विश्वविद्यालय के श्री ''वादिविल'' ने इसका अँग्रेजी भाषा में पद्यानुवाद करके इसको आगे बढ़ाया था।

6. रूस :- रूसी विद्वान अलेक्साई-वारान्निकोव ने सबसे पहले रामचरित मानस का रूसी भाषा में अनुवाद करके भारत-रूस सांस्कृतिक मित्रता की नींव रखी। उनके गाँव कापोरोव जो सेंट पीटर्स वर्ग के उत्तर में मौजूद है, में उनकी (वारान्निकोव) समाधि पर मानस की अर्द्धाली ''भलो भलाहिह पै लहै' अब भी लिखा हुआ मौजूद मिलेगा।

7. चीन :- चीन में भी बाल्मिकी रामायण और रामचरित मानस दोनों का पद्यानुवाद हो चुका है। वहाँ के लोग भी रामायण पढ़ने व सुनने में पूरी रुचि रखने लगे हैं। भजन संकीर्तन में भी भाग लेने लगे हैं।

8. अमेरिका :- अमेरिका ने भी इसे एक आध्यात्मिक ग्रन्थ की बजाए साहित्यिक ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया है। अमेरिका विश्वविद्यालय में इसने अपना स्थान, भारतीय विद्वानों के कारण नहीं बल्कि वहाँ के स्थानीय विद्वानों के कारण बनाया है। देव भाषा संस्कृत को पश्चिमी राष्ट्रों के विश्वविद्यालयों में स्थान मिल जाने के कारण वाल्मिकी रामायण का परिचय इन राष्ट्रों में सैंकड़ों वर्ष पूर्व ही हो चुका था। और यही कारण है कि अब तक 12 देशों में 16 अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन हो चुके हैं।

9. इटली :- इटली के विद्वान डॉ. टेसीटोरी ने हिन्दी साहित्य में शोध ग्रन्थ लिखा था। विषय था ''मानस और बाल्मिकी रामायण का तुलनात्मक अध्ययन'' जिस पर उन्हें 1910 में फ्लोरेंस विश्वविद्यालय ने डाक्ट्रेट की उपाधि दी थी।

10. इंग्लैंड :- डॉ. जे. एन. कार्पेण्टर ने ''थियोलोजी ऑफ तुलसीदास'' नामक शोध ग्रन्थ लिखा था और उसे 1918 में लंदन विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया था।

11. इसी प्रकार जापान, जर्मनी, स्पेन आदि देशों में भी उनकी अपनी भाषा में रामायण का अनुवाद हो चुका है।

फिजी, मारीशस, सूरीनाम, ट्रिनीडाड व हालैंड को अब तक भारत से जोड़े रखने में मुख्य भूमिका रामायण की ही है। क्योंकि हमारे अप्रवासी भारतीय 100-150 वर्ष पूर्व ही मजदूरी करने रामचरित मानस लेकर उन देशों में चले गये थे और उन लोगों के माध्यम से ही वहाँ रामायण का प्रचार-प्रसार हुआ है?

12. हमारे पूर्वजों की संस्कृति से हम अनजान?

रामायण में भगवान राम के परिवार की कथा है। एक आदर्श परिवार की कथा। मनुष्य को इस संसार में कैसी-कैसी परिस्थितियों में किस प्रकार से मर्यादित शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहिए, यह सब कुछ भगवान राम ने स्वयं व्यवहारिक रूप से करके दिखाया है। उन्होंने जो सामाजिक मूल्य हमारे लिए स्थापित किये उनको अन्य देशों के अन्य धर्मों के अन्यान्य जातियों के लोग स्वीकार कर रहे हैं। पर हम क्षत्रियों में अधिकतर आज भी उससे अनभिज्ञ ही हैं। हमारे सामाजिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। बड़ों के प्रति श्रद्धा, छोटों के प्रति स्नेह की रामायण की रीति-नीति को भूलते जा रहें हैं? माता-पिता की आज्ञा के सामने राज्य के अधिकार को गौण मानकर जंगलों में बनवासी जीवन बिताना श्रेष्यकर मानना भूल चुके हैं। अपनी मर्यादाओं की परिभाषा भूल चुके हैं। चोरी, बलात्कारी व मारपीट की घटनाओं में हमारे समाज के युवकों के नाम पढ़कर ग्लानि होती है।

जिस समाज के पूर्वजों की गाथा मस्तक पर रख कर लोग विश्व में प्रचार-प्रसार कर रहे हैं, जिनकी गाथा औरों को रास आ रही है, हम हैं कि हमारी ही

संस्कृति को भूलते जा रहे हैं और पाश्चात्य संस्कृति पर लट्टू होते जा रहे हैं।

अन्य जातियों की औरतों और पुरुषों को हम उत्सवों और त्योहारों पर हमारे पूर्वजों के गीत गाते मस्त होते देखते हैं, वहीं हम हमारे समाज के कई युवकों को मर्यादाहीन नाच-गाने गाते देख सुनकर शर्म सार हो जाते हैं। दशहरा वर्षा काल के बाद शिशिर ऋतु का प्रारम्भिक मास है। इसमें ऋतु (प्रकृति) परिवर्तन होता है। नवरात्रा में दुर्गा पूजा होती है। हम क्षत्रिय शक्ति के उपासक हैं, हमें उस अवधि में यथा सामर्थ्य उपासना अवश्य करनी चाहिए। इन दिनों में जगह-जगह रामलीला प्रदर्शन होता है। दशहरा पर्व पर रामायण पारायण की अपनी विशेष महत्ता होती है। नवरात्रा में श्रद्धापूर्वक रामायण का किया गया पारायण व वाचन या श्रवण दसों प्रकार के पापों को नष्ट करने वाला होता है। दशहरे के पावन पर्व पर दुर्गा पूजा व राम कथा की इस विशेषता से किसी को वंचित नहीं रहना चाहिए।

हमें हमारे अन्दर की अनेकानेक बुराइयों को त्याग कर भगवान श्री राम के जीवन के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

उपसंहार :- हम क्षत्रिय अन्यों की रक्षा करने का दायित्व सम्मालते थे। आज परिस्थिति ऐसी बनती जा रही है कि हम क्षत्रिय अपने आपकी रक्षा करने में ही असमर्थ बनते जा रहे हैं। हम क्षत्रिय औरों को उनका वाजिब अधिकार दिलाते थे और आज हम अपना स्वयं का अपना अधिकार ही प्राप्त करने में असक्षम हैं? हम दूसरों को एकता का पाठ पढ़ाया करते थे। संगठन का महत्त्व समझाया करते थे। भगवान श्री राम ने बन्दर भालू और रींछ जैसे वन्य प्राणियों को संगठित करके एक विशाल सेना बनाकर रावण जैसे महान दैत्य को धराशायी करके दुनियाँ को दिखा दिया था कि वैसी विषम परिस्थितियों में भी व्यक्ति अपनी मर्यादाओं में रहकर सफलता प्राप्त कर सकता है। आज हमें कोई विभूति संगठित करने का प्रयास करती है तो हमारे में ही कई गद्दार की भूमिका निभाने वाले तैयार हो जाते हैं। कैसे होगा समाज का उद्धार? कैसे होगा समाज का सुधार! जब हम अपने अहम् की सन्तुष्टि के लिए कैसा भी प्रदर्शन करने को उतारू हो जाएंगे।

अभी समय है सम्भलने का, सचेत होने का, सुबह का भूला शाम को घर आने का। हमें दशहरा, दिवाली जैसे पर्वो पर आत्मचिन्तन करना चाहिए। ऐसे अवसरों पर हमें चिन्तन करना चाहिए कि हम क्या थे? कैसे थे, और अब हम क्या हैं? हमें कैसा होना चाहिए? समय की नज़ाकत क्या है? भूतकाल में की गई त्रुटियों की पुनरावृति तभी रुक सकेगी जब कि हम अपना आत्म मंथन करके हमारी भूल को समझ सकेंगे।

रामायण के फैलते विश्व प्रचार से बड़ी प्रसन्नता होती है, बड़ा स्वाभिमान महसूस होता है लेकिन आत्मानन्द की अनुभूति तभी होगी जब हमारा समाज संगठित होकर परस्पर विश्वास व श्रद्धा के भाव बनाकर परस्पर एक दूसरे को अधिकाधिक सम्मान देने के भावों को आत्मसात करके जीना सीख जाएगा। ●

महापुरुष पूजा के लिये नहीं पैदा होते हैं, न उनकी पूजा की कोई लालसा होती है। और जिसके मन में पूजा की लालसा हो, वह और कुछ भी हो, महापुरुष नहीं हो सकता। महापुरुष का उपयोग यह है कि वह हमारे जीवन में, हमारे खून में, हमारे विचारों में, हमारी प्रतिभा में प्रविष्ट हो सके। और हमारी प्रतिभा में किसी को द्वार तभी मिलता है जब हम विचार करते हैं, आलोचना करते हैं, खोजबीन करते हैं।

– आचार्य रजनीश

अच्छे दिन कब आएँगे?

– श्री अजित सिंह कुणघेर

संसार के सभी लोग अपने जीवन को सुख समृद्धि से भर कर अच्छे दिन लाने की चाह रखते हैं। इसके लिए स्वधर्म का पालन आवश्यक है। जिसको न करके अच्छे दिनों की चाह रखना, कितना हास्यास्पद है। कर्तव्य कर्म न करके केवल चाह रखने से न तो अपने जीवन में ही अच्छे दिन आ सकते हैं, एवं न ही दूसरों के जीवन में हम ला सकते हैं। खुली आँखों, बुद्धि एवं अंतःकरण से सोचें, तो हम जैसा बनना चाहते हैं, उसके लिए जो करना आवश्यक है, वो करते नहीं, तो यह कल्पना पूर्ण मूर्खता ही है।

पूज्य भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने एक वक्तव्य में कहा था कि,–''क्षत्रिय, कुछ बनने के लिए नहीं, कुछ करने के लिए जन्मता है। उसने कुछ करके ही अपने इतिहास का सृजन किया है, न कि कुछ बनने के लिए।''

कवि श्री सूरसिंह जी, तखत सिंह जी ने भी अपनी एक रचना में कहा है,–''सुंदरता प्राप्त करने के लिए सुन्दर बनना पड़ता है।'' लेकिन हम अपने आप को टटोलते हैं, तो मालूम पड़ता है कि हम अवगुणों से भरे पड़े हैं, फिर भी अपने आपको गुणवान समझकर दूसरों को सुधारने निकल पड़ते हैं, पर कुछ कर नहीं पाते, तो दोष दूसरों को देते हैं। तब पूज्य तन सिंह जी की यह पंक्ति हमें सावधान करती है–

'अपने आपको उठाना, सारी कौम को उठाना है'' अपने आप का निर्माण किए बिना हम अच्छे दिन कैसे ला सकते हैं। गीता में भी कहा है,–'किए बिना कुछ होता नहीं, और दिए बिना कुछ मिलता नहीं।' आजकल सभी के कानों–और जुबान पर एक ही वाक्य खेल रहा है,–''अच्छे दिन कब आएंगे?''

- बिना हेलमेट पहने दुपहिया वाहन चलाकर कहते हैं, अच्छे दिन कब आएंगे।
- रिश्वतखोर आदमी पूछता है, अच्छे दिन कब आएंगे।
- प्याऊ पर पानी पीने के गिलास जंजीरों से बाँधने पड़ते हैं, और कल्पना है अच्छे दिनों की।
- बिजली की चोरी करने वाला भी पूछता है, अच्छे दिन....
- इधर–उधर कचरा फैंकने वाला पूछता है,.....
- कामचोर कर्मचारी पूछता है,.....
- टैक्स चोरी करने वाला व्यक्ति पूछता है,...
- राष्ट्र से गद्दारी करने वाले भी पूछते हैं,.....
- राष्ट्रगान व प्रार्थना के वक्त बातें करने वाले पूछते हैं,..
- बालकों को विद्यालय में न भेजने वाले लोग,....
- घरों में दिन भर टी.वी. सिरियल देखने वाली औरतें पूछती हैं.......
- सड़क पर लाल सिग्नल तोड़ने वाले.......
- पान खाकर इधर–उधर थूकने वाले.......
- माँ के हाथ का बना ममता भरा भोजन छोड़कर पीजा, भेलपुरी, पानीपुरी, मैगी से पेट भरने वाले...
- भगवान राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ध्रुव, प्रह्लाद, अर्जुन, महाराणा प्रताप, शिवाजी और दुर्गादास जैसे महापुरुषों को छोड़कर फिल्मी अभिनेताओं को अपना आदर्श मानने वाले.......
- अपनी संस्कृति एवं स्वदेशी वस्तुओं को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति एवं विदेशी वस्तुओं को अपनाने वाले.......
- अपने परिवार को छोड़कर फेसबुक दोस्तों को महत्त्व देने वाले.......
- खुद कुछ न करके दूसरों को सलाह देने वाले.....
- अच्छे कार्य को करने वाले लोगों का विरोध करने वाले.....

- परिवार व बच्चों के साथ न रहकर केवल धन के पीछे दौड़ने वाले......
- फिल्म व विडियो एकाग्रता से देखने व सत्संग में नींद लेने वाले.....
- पाँच रुपये की रसीद बनवाकर पाँच लड्डुओं के प्रसाद की कामना रखने वाले.....
- पूजा, कथा, कीर्तन, भजन में बातें करने वाले.....

स्थिति यह है कि एक मैडम ने थोड़ी देर नेट बंद होने पर कस्टमर केयर पर फोन कर कहा कि,- 'अब मैं क्या करूँ।' जबाब मिला, 'कुछ अपने घर का काम कर लो।'

वर्तमान समय में इन सभी दोषयुक्त समस्याओं से हमें कोई बचा सकता है, तो केवल एक ही, और यह है, 'श्री क्षत्रिय युवक संघ'। अच्छे दिनों के निर्माण के लिए कोई यूनिवर्सिटी है तो वह है, 'श्री क्षत्रिय युवक संघ' जो केवल ज्ञान न देकर अपने पंचामृतम् कार्यक्रमों में सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली द्वारा हमारे जीवन में सद्गुणों को आदत में ढ़ालने का काम करता है। शाखा, शिविर, स्नेह मिलन, महापुरुषों की जयंतियाँ मनाना एवं सम्पर्क यात्राएँ इसके पंचामृतम् कार्यक्रम हैं। इन कार्यक्रमों में संघ, समाज राष्ट्र एवं मानवता की समस्याओं की जड़ों में जाकर उपयुक्त औषधि द्वारा रोग का निदान करता है। इस यूनिवर्सिटी से प्रशिक्षण प्राप्त युवक एवं युवतियाँ ही समाज, राष्ट्र एवं विश्व में अच्छे दिन लाने के काम करेंगे।

आजकल मनुष्य बिना श्रम व व्यायाम किए, सिर्फ टॉनिक व टेबलेट से शरीर को सुडोल रखना चाहता है, वह कैसे सम्भव है। स्वजाति एवं स्वधर्म के संस्कारों से दूर भाग रहा है। इन सबका समाधान है, श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखाओं एवं शिविरों में। संघ हमें बताता है, कि जिस कुल में जन्म लेने के लिए देवता भी तरसते हैं, उस क्षत्रिय कुल में हमें जन्म मिला है, इसमें परमात्मा की हमसे कोई विशिष्ट चाह छिपी है, और वह है, हमारे द्वारा इस जीवन में अपने स्वधर्म अर्थात् क्षात्र धर्म का पालन, जिसके द्वारा हम संसार में फैल रहे अज्ञानता रूपी अंधकार को हटाकर ज्ञान का प्रकाश दे सकें, वेदना से त्रस्त प्राणियों के करुण क्रंदन एवं पृथ्वी व संस्कृति के रुदन को सुनकर उसका त्राण कर सकें।

आज के समय में मानवता को सही राह दिखाने वाला एकमात्र सितारा श्री क्षत्रिय युवक संघ ही है, जो अपने शिविरों में प्रात: 4 बजे से रात 10 बजे तक सभी क्रियाकलापों में खेलों, सहगीतों, यज्ञ, बौद्धिक एवं रात्रि कार्यक्रमों द्वारा श्रम, अनुशासन, ज्ञान एवं प्रेम का रस घोलकर पिलाता है, जिससे हमारे कदम स्वधर्म पालन में स्वतः ही बढ़ जाते हैं।

पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में हमारे पारिवारिक सम्बोधन जो माताश्री-पिताश्री, दादीसा-दादोसा, बा-बापू श्री-जीसा भूलते जा रहे हैं, एवं कई भूल भी गए हैं, जो अब पापा-मम्मी, मोम-डेड, और अब और भी शॉर्टकट, मो और डे हो रहा है। बच्चा माता-पिता को मो-डे कहे तब माता-पिता को रोना पड़ेगा। सिर से एडी तक राजपूती पेशाक को भूलकर अर्द्धनग्नता वाले कपड़े आ गए हैं। प्रकृति के अवयव, जैसे चाँद, सूरज, सितारे, ग्रह, नक्षत्र, पेड़-पौधे, फल-फूल आदि सभी स्वधर्म का पालन कर रहे हैं, पर मानव नहीं। स्वधर्म का पालन न करना पतन को निमंत्रण देना है।

दिन-प्रतिदिन बढ़ते वृद्धाश्रम, अस्पताल एवं उनमें नाना प्रकार के दुःखों एवं संक्रमण रोगों से भर्ती होते लोगों व नाना प्रकार की दवाईयों के बीच फँसा मानव भी अच्छे दिनों की चाह रखता है? इन सभी से बचने व संसार में अच्छे दिन लाने का हमारे लिए एक ही अस्पताल या यूनिवर्सिटी है,-'श्री क्षत्रिय युवक संघ।'

●

गतांक से आगे

आदर्श और अनूठे गाँव

– कर्नल हिम्मतसिंह

हरिसल महाराष्ट्र
पहला आदर्श डिजिटल गाँव

महाराष्ट्र में अमरावती जिले का पिछड़ा गाँव हरिसल और इसके आस-पास का क्षेत्र कभी कुपोषण, अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी और स्वास्थ्य सम्बंधित समस्याओं से जूझ रहा था। परन्तु जब से दुनिया की दिग्गज सॉफ्टवेयर कम्पनी माइक्रोसॉफ्ट ने इस गाँव को आदर्श डिजिटल गाँव बनाने के लिए गोद लिया तब से इस गाँव की तस्वीर और तकदीर बदलने लगी। अब यह गाँव लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री का पुरस्कार पाने की दौड़ में है और यह पूरे प्रान्त के लिए सरकारी सेवाएँ उपलब्ध कराने का एक बेहतर मॉडल भी प्रस्तुत करने जा रहा है।

महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस 2015 में अपनी अमेरिका की यात्रा के दौरान माइक्रोसॉफ्ट के सी.ई.ओ. सत्या नाडेल से मिले और गाँवों की पुरानी समस्याओं के 'डिजिटल' समाधान ढूंढने पर चर्चा की थी। माइक्रोसॉफ्ट ने अपनी 'व्हाइट स्पेस' याने कि दो टी.वी. चैनल के बीच उपलब्ध स्पेक्ट्रम का टेक्नालॉजी के जरिये इस्तेमाल कर हरिसल क्षेत्र में मुफ्त इण्टरनेट सेवा उपलब्ध करवाई है। माइक्रोसॉफ्ट ने अपने अधिकारी भी वहाँ नियुक्त किये जो राज्य सरकार के साथ काम करते हैं।

माइक्रोसॉफ्ट के सहयोग से राज्य सरकार इस क्षेत्र में गाँवों को आत्मनिर्भर बनाना चाहती है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए वहाँ के लोगों को रोजगार मुहैया कराकर उनकी आमदनी बढ़ाना और स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है।

रोजगार की संभावनाएँ तलाशने पर पाया गया कि अमरावती टेक्सटाइल का एक बड़ा केन्द्र है, जहाँ पर बुनकर पश्चिमी बंगाल से आते हैं, क्योंकि स्थानीय लोग इस कौशल में निपुण नहीं हैं। राज्य सरकार ने दयालबाग शिक्षण संस्थान के मार्फत स्थानीय औरतों को प्रशिक्षण दिलाकर उन्हें दक्ष बुनकर बना दिया जिससे उनको रोजगार मिलने लग गया है।

अनपढ़ युवाओं को शिक्षित करने के लिए राज्य सरकार ने 'हेवलेट पैकर्ड' के साथ मेलजोल कर अत्याधुनिक ई-क्लासरूम बनवाये। वहाँ पर स्थानीय भाषा में फिल्मों के जरिये पाठ पढाये जाते हैं। शिक्षण की इंटरेक्टिव मोड पद्धति की सभी ने प्रशंसा की है। इसने बच्चों को इतना लुभाया है कि बीच में ही स्कूल छोड़ने की समस्या समाप्त हो गयी है।

प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं की कमी को दूर करने के लिए सरकार ने सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल अमरावती और जे.जे. हॉस्पिटल के साथ समन्वय बिठा कर टेली मेडिसिन की व्यवस्था की है। सप्ताह में एक दिन ग्रामीण अपने डॉक्टर से मिलने के लिए टेली मेडीसन सेण्टर पर जमा होते हैं। अब ग्रामीण को मूलभूत स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए लम्बी दूरी की यात्राएँ नहीं करनी पड़ती है। आँखों के इलाज के लिए एल. बी. प्रसाद आई इन्स्टीट्यूट की सेवायें ली जा रही हैं। इस संस्था ने हरिसल में एक मोबाइल यूनिट स्थापित कर रखी है।

विद्युत आपूर्ति के लिए सौर ऊर्जा संयन्त्र लगाये गये हैं, जहाँ पर विद्यार्थियों को इनफोर्मेशन एण्ड कम्यूनिकेशन टेक्नालॉजी का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

कृषि उपज बढ़ाने के लिए सोइल टेस्टिंग की सुविधा उपलब्ध है तथा किसानों को सभी फसलों की जानकारी दी जाती है।

विकास को आगे बढाने के लिए सरकार C-DAC सेण्टर फॉर डेवेलपमेण्ट ऑफ एडवान्सड कम्प्यूटिंग के साथ साझेदारी तलाश रही है कि वह सैटेलाइट कम्यूनिकेशन के साथ मोबाइल यूनिट्स उपलब्ध कराये ताकि बच्चे के जन्म के समय विशिष्ट चिकित्सक के साथ सम्पर्क स्थापित कर जन्म मृत्यु दर को शून्य पर लाया जा सके।

हरिसल गाँव को गोद इसलिए लिया कि, यह गाँव मानव विकास सूचकांक के पैमाने पर सबसे अधिक पिछड़ा गाँव था और सोच यह रही कि अगर इस गाँव को विकसित किया जा सकता है तो फिर शेष गाँवों को यहाँ के अनुभव से आसानी से विकसित किया जा सकेगा।

माइक्रोसॉफ्ट और सरकार के प्रयासों ने कुछ ही समय में इस गाँव को आदर्श डिजिटल गाँव बना दिया है। संचार क्रान्ति से ऐसे बदलाव आसानी से लाये जा सकते हैं। समय आ गया है जब लोग रूढ़िवादी सोच से मुक्ति पाकर विज्ञान के महत्त्व को समझें।

हसुड़ी सिद्धार्थनगर (उत्तर प्रदेश) स्मार्ट विलेज

हसुड़ी औसानापुर उत्तर प्रदेश के जिला सिद्धार्थ नगर का एक गाँव है जिसे राज्य का पहला स्मार्ट विलेज बनने का गौरव प्राप्त है। यह उत्तर प्रदेश का पहला ऐसा गाँव है जहाँ एक क्लिक पर आपको गाँव से संबंधित सभी जानकारी उपलब्ध हो जायेगी। वाई-फाई, सी. सी. टी.वी. कैमरे, ग्राहक सेवा केन्द्र, पब्लिक एड्रेस सिस्टम जैसी तमाम सुविधाएँ इस गाँव में मौजूद हैं।

गुजरात के पुंसारी गाँव की तर्ज पर इसको विकसित किया गया हैं। यहाँ महिलाओं की सुरक्षा और सहूलियत के लिए 90 स्ट्रीट लाइट्स, 23 सी.सी.टी.वी. कैमरे गाँव के हर कोने पर लगे हैं जिससे वे सुरक्षित महसूस करें और प्रकाश में अपना काम निपटाएँ। ग्राम प्रधान को डिजिटल एम्पावरमेंट फाउंडेशन में अपने गाँव की प्रस्तुति देने का अवसर मिला। वहाँ फाउंडेशन के प्रमुख ओसामा मंजर गाँव की प्रस्तुति से बहुत प्रभावित पाँच कम्प्यूटर प्रदान किये। हुए और उन्होंने गाँव के लिए पाँच सिलाई मशीन और पाँच कम्प्यूटर प्रदान किये।

लखनऊ के गोमतीनगर में स्थित ताज होटल में इलेट्स कम्पनी द्वारा आयोजित कार्यक्रम ''सैकण्ड स्मार्ट सिटी सम्मिट'' लखनऊ 2017 कांफ्रेस हुई। इस कांफ्रेस में हसुड़ी गाँव के प्रमुख दिलीप त्रिपाठी को अपने गाँव की उपलब्धियों के बारे मे बताने के लिए आमंत्रित किया तो उन्होंने कहा हमारे गाँव की वैब साइट डिजिटल हसुड़ी डाट काम पर एक परिवार के बारे में 36 तरह की जानकारी के साथ ही गाँव में कौनसी चीज कहाँ है, किसकी कृषि भूमि कहाँ है. आदि पूरी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। गाँव के स्कूल में आठ कैमरे लगे हुए हैं। सन् 2015 में स्कूल में 20 विद्यार्थी थे सन् 2016 में यह संख्या दुगुनी से भी अधिक हो गई।

गाँव में हर तीसरे घर पर एक कूड़ादान रखा हुआ है और कॉमन सर्विस सेण्टर उपलब्ध है। ग्राम पंचायत की आबादी करीब 1200 ही होने के कारण यहाँ सालना बजट लगभग पाँच लाख रुपये आता है इसके बावजूद यहाँ के युवा प्रधान ने ठान लिया है कि गाँव अत्याधुनिक तकनीक से पूरी तरह लैस हो जिसके लिए वो सभी स्रोतों से जानकारी हासिल करते हैं। उन्होंने तय कर लिया कि उनका गाँव किसी भी सुविधा से वंचित नहीं रहेगा।

हसुड़ी औसानपुर को पंचायती राज दिवस (24 अप्रेल 2018) पर नानाजी देशमुख राष्ट्रीय गौरव ग्राम पुरस्कार और दीनदयाल उपाध्याय सशक्तिकरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दिलिप त्रिपाठी देश

के पहले ग्राम प्रधान हैं जिन्हें दोनों पुरस्कार एक साथ प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है।

ग्राम पंचायत हसुड़ी औसानपुर ने दोनों पुरस्कार एक साथ लेकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

हिवरे बाजार–महाराष्ट्र

हिवरे बाजार महाराष्ट्र राज्य के जिला अहमदनगर का एक गाँव है जो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के ''आदर्श गाँव'' के सपने को साकार कर रहा है।

सत्तर के दशक में यह गाँव प्रकृति के प्रकोप से अकाल और गरीबी से जूझ रहा था। परन्तु समय ने करवट बदली और 1990 से इस गाँव के विकास की गाड़ी द्रुतगति से दौड़ने लगी। आज यह गाँव धनाढ्य लोगों का गाँव कहलाता है जहाँ अनेक करोड़पति रहते हैं। इस गाँव को रंक से राजा बनाने का श्रेय जाता है यहाँ के सरपंच श्री पोपटराव पवार को जिसने गाँव की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को हमेशा के लिए बदल दिया।

पहले यहाँ के लोगों की औसत आय मात्र 830 रुपये सालाना होती थी जो 1998 में बढ़कर 30000 रुपये सालाना पहुँच गई और आगे बढ़ती जा रही है। 1250 की आबादी वाले इस गाँव में 60 से अधिक करोड़पति हैं। यह गाँव दरअसल विकासशील राष्ट्र का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। यह गाँव अपने हलचल भरे बाजार का, स्वच्छ सड़कों का, लहलहाती खेती का और आधुनिक उपकरणों से युक्त शानदार भवनों का बखान करते थकता नहीं है।

इस गाँव में खुले में शौच, तम्बाकू और मदिरा सेवन करना निषेध है। साथ ही जंगल की कटाई, चराई, सिंचाई के लिए ट्यूबवेलों की खुदाई भी प्रतिबंधित है। यह गाँव वर्ष प्रति वर्ष संपन्नता की ओर अग्रसर है। यहाँ लोगों ने अपना जीवन स्तर सम्मान जनक बनाकर आय पहले से दुगुनी कर ली है।

यह गाँव 'सबका साथ सबका विकास' के नारे का भी दुर्लभ उदाहरण पेश करता है। इस गाँव में मात्र एक मुस्लिम परिवार के लिए भी एक मस्जिद का निर्माण कराया गया।

आज से 32 वर्ष पहले यह गाँव अकाल की मार और गरीबी से ग्रस्त था। हर वर्ष हालात बद से बदतर होने लगे। पानी की कमी से कुएँ सूख गये जिसकी वजह से परत भूमि का क्षेत्रफल बढने लगा और आय के स्रोत सिकुड़ने लगे। नतीजन लोग चिंतित रहने लगे और 'गम गलत करने' के लिए नशे के आदि हो गये। गृह क्लेश बढने लगे और लोग पलायन करने लगे। कोई भी परिवार इस अभिशाप से अछूता नहीं रहा। अराजकता के माहौल में स्थिति ने भयंकर रूप धारण कर लिया और गाँव उजड़ने लग गया।

गाँव में शिक्षा की स्थिति बहुत खराब थी। विद्यालय के शिक्षक छात्रों से शराब मंगवाकर पीते थे। न तो खेल का मैदान और न ही छात्रों के बैठने की सम्मान जनक व्यवस्था।

हिवरे बाजार में खेतीबाड़ी की व्यवस्था ठीक नहीं थी और न ही रोजगार की। जिसके चलते प्रति व्यक्ति सालाना औसत आय मात्र 800 रुपये थी। सिंचाई के लिए पानी की अनुपलब्धता के कारण केवल एक ही फसल पर निर्भर करना पड़ता था। वर्षा की कमी और गाँव वालों के कहर बरपाने से जंगल भी उजड़ने लगे।

1989 में श्री पोपटराव पंवार के नेतृत्व में गाँव सभा का गठन हुआ और तब से गाड़ी पटरी पर चलने लगी। सबसे पहला प्रहार धूम्रपान और मद्यपान पर किया और अवैध शराब की दुकानें बंद करवा दी गई और साथ ही तम्बाकू और शराब के इस्तेमाल को भी बंद कर दिया।

उसके बाद ग्रामसभा ने गाँव की आर्थिक स्थिति पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। क्योंकि यह क्षेत्र रैन

शैडो एरिया में आता है अतः औसत वर्षा सदैव कम और खेती के लिए अपर्याप्त होती थी। अतः पानी की जरूरत को पूरा करना निहायत ही जरूरी हो गया। श्री पंवार ने वर्षा जल संचयन (Rain water Harvesting) और जल संरक्षण (Watershed Conservation) की वृहत् योजना बनाई। वित्त प्रबंधन के लिए सरकारी ग्रांट के अलावा बैंक से कर्ज लिया और ग्रामीणों के सहयोग से योजनाबद्ध कार्य प्रारम्भ कर दिया।

जलाशयों के निर्माण के तहत यहाँ पर 52 मिट्टी के और 32 पत्थरों के बांधों का निर्माण किया गया। इसके अलवा अनेक चैक डैम्स और परकोलेशन टैंकों का भी निर्माण हुआ। वॉटर शैड के लिए लाखों पेड़ लगवाये और घास की बुआई की गई।

उपरोक्त उपायों से गाँव में कृषि की सिंचाई की जरूरतें पूरी होने लगी। 1990 में इस गाँव में केवल 90 कुएँ थे वहाँ आज 294 कुएँ हैं। कुछ ही वर्षों से कुओं का जलस्तर बढ़ने लगा। पानी की उपलब्धता बढ़ते ही खेतों में फसलें लहलहाने लगी और गाँव में खुशहाली दृष्टिगोचर होने लगी। पानी का महत्त्व समझ कर गाँव वालों ने अधिक पानी माँगने वाली फसलों से स्वप्रेरणा से किनारा कर लिया और सब्जी, दालें और फल-फूलों की खेती करना प्रारम्भ कर दिया।

खेती के साथ ही पशुपालन पर भी ध्यान केन्द्रित किया जिससे दुग्ध उत्पादन बढ़ा। 1990 में दुग्ध उत्पादन केवल 33 गैलन प्रतिदिन था। वह बढ़कर अब 1000 गैलन प्रतिदिन हो गया।

ग्रामवासी प्रकृति के प्रकोप से और मानव निर्मित आपदाओं से निपटने की कला भी सीख रहे हैं।

धीरे-धीरे गाँव में खुशहाली लौट रही है तो पलायन कर गये लोग भी घर वापसी की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

1995 में कुल 182 परिवारों में से 168 परिवार गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे थे और अब ढूँढने पर भी कोई गरीब नहीं मिलता है।

गाँव का सदैव साफ-सुथरा रहना, हर घर में शौचालय का होना, खाना बनाने के लिए हर घर में बॉयोगैस का उपलब्ध होना, हायर सैकेण्ड्री स्कूल और स्वास्थ्य केन्द्र की मौजूदगी, बैंक की सुविधा आदि इस गाँव की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ है। बिजली और पानी की आपूर्ति निर्बाध रूप से होती है। ग्राम सभा में तीन सदस्य औरतें हैं और हर दूसरी लड़की की शिक्षा और विवाह का खर्च ग्राम सभा वहन करती है। ये सुविधाएँ देश के किसी अन्य गाँव में देखने को नहीं मिलती हैं।

गाँव के अनेक विद्यार्थी डॉक्टरी की पढ़ाई कर रहे हैं। गाँव में परिवार नियोजन HIV और AIDS की रोकथाम के लिए उपाय किये गये हैं।

श्री पंवार के सुशासन, कठिन परिश्रम और गाँव के विकास के प्रति समर्पण भाव और ग्रामवासियों की सहायता के कारण हिवरे बाजार को महाराष्ट्र सरकार ने आदर्श गाँव के अलंकरण से सम्मानित किया है। 2016 में अपनी मन की बात के प्रसारण के दौरान भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गाँव के नेतृत्व और गाँव के लोगों के द्वारा किये गये प्रयासों की, और अर्जित की गई उपलब्धियों की भूरी भूरी प्रशंसा की। यह इसी कमाल का नतीजा है कि महाराष्ट्र सरकार ने श्री पोपटराव पंवार को आदर्श ग्राम योजना का अध्यक्ष नियुक्त किया है और सौ अन्य गाँवों को आदर्श गाँव में रूपान्तरित करने का लक्ष्य रखा है।

हिवरे बाजार के विकास की यात्रा की समीक्षा करने से यह ज्ञात होता है कि विकास के उद्देश्य को प्राप्त करने में तीन मुख्य बिन्दुओं के सम्मिश्रण की अहम् भूमिका रही है :-

1. योग्य और प्रभावी नेतृत्व ।
2. ग्राम वासियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी ।

(शेष पृष्ठ 33 पर)

यात्रा

– अमरसिंह अकली

प्रायः साधारण भाषा में हम एक स्थान से दूसरे स्थान तक आवागमन को मात्र यात्रा कहते हैं। जब हम कोई यात्रा करते हैं, तो अमुमन उससे पूर्व ही यात्रा का उद्देश्य, उस तक पहुँचने का सरल मार्ग, हमारा सामर्थ्य, उस पर होने वाला व्यय, बीच रास्ते आने वाले विघ्न एवं उनसे लड़ने की क्षमता आदि तमाम बातों पर गहराई से चिन्तन-मनन करने के बाद ही यात्रा शुरू करते हैं। तब हम गंतव्य स्थान पर आसानी से पहुँच भी जाते हैं। और यदि यात्रा के हर पहलू पर विचार किए बिना ही शुरू कर देते हैं, तो राह में पड़ने वाले विघ्नों में फंसकर भटक जाते हैं, अथवा जीवन ही गंवा बैठते हैं। अत: किसी ने ठीक ही कहा है –

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछिताय।
काम बिगारे आपणो, जग में होत हंसाय।।

इस जीवन में हमें दो प्रकार की यात्राएँ करनी पड़ती हैं–

1. लौकिक यात्रा :– जो इस जीवन को जीने तक ही सीमित है। **2. परलौकिक यात्रा :–** इसे आध्यात्मिक यात्रा भी कह सकते हैं, जो मृत्युलोक के इस वर्तमान जीवन को हमारे मूल उद्देश्य भगवत् प्राप्ति अथवा परम्धाम मोक्ष तक सरल मार्ग से पहुँचाती है।

इस आध्यात्मिक यात्रा की तैयारी में भी साधक को, इसके हर पहलू पर गहराई से चिंतन-मनन करके स्वयं को हर पहलू के योग्य बनाना पड़ेगा। बीच राह में पड़ने वाले अवरोधक तत्त्व, भटकाव, विकट मोड़ आदि से संघर्ष करने के लिए आवश्यक साधन, शक्ति को जुटाकर, आत्म-परीक्षण करते हुए बढ़ेगा तो मंजिल पा सकता है।

अब प्रश्न उठता है, कि इस भयंकर कलयुग में दूषित वातावरण में जीवन यापन करते ऐसी आध्यात्मिक यात्रा के लिए आवश्यक साधनों की जानकारी एवं प्राप्ति करवा कर निर्विघ्न यात्रा पूर्ण कराने का एक निर्देशक के रूप में कौन कार्य करे।

ऐसे साथकों की चाह को राह दिखाने वाला, इस भयंकर काली रात्रि में भटके हुए राहगिरों का ध्रुव तारा बनने वाला, एकमात्र निर्देशक, श्री क्षत्रिय युवक संघ ही है। जो इस जोखम भरी यात्रा को सरल बनाकर अपने गंतव्य तक निर्विघ्न पहुँचाने का कार्य कर रहा है। जिसकी शरण में जाने से साधक के तमाम झंझट मिट जाते हैं। जरूरत है, अपनी जीवन डोर संघ के हाथों थमाने की। आगे का सारा काम संघ का है। जैसे अर्जुन के हताश होने पर श्री कृष्ण ने अन्त में उसको उनकी शरण में आने को कहा था,

सर्व धर्मान् परित्यज्य, मामेकम शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

इसी प्रकार,

सनमुख होई जीव मोहि जबही,
जन्म कोटि अध नासहिं तबहि।

(रामायण)

संघ की शरण लेने पर भी यात्राकाल के कुछ छोटे-मोटे भटकाव से तो पार हो जाते हैं, पर तीन विकट मोड़ आते हैं, काम, क्रोध और लोभ। जो हमारी साधना रूपी गाड़ी के बीच राह में पहाड़ बनकर पथ भ्रष्ट करने खड़े हो जाते हैं। तब जैसे रेलगाड़ी की पटरी खराब होने पर उसे समय पर पहुँचने में देरी हो जाती है, हमारी जीवन यात्रा भी रुक जाती है, और सावधानी न बरती, तो दुर्घटना में नष्ट भी हो सकती है। अतः समझदार ड्राईवर की तरह इन तीनों विकट मोड़ों में यात्रा को बचाकर चलना है।

राह संकड़ी है, वाहन ज्यादा है, फिर ऐसे मोड़ हैं, तो सावधानी हटी और दुर्घटना घटी। इन तीनों शत्रुओं ने तो बड़े-बड़े योगियों को पथभ्रष्ट कर दिया।

जैसे काम के वशीभूत होकर नारद जी ने माया रूपी राजकुमारी से शादी करने के लिए हरि का रूप माँग लिया, एवं इच्छा पूरी न होने पर क्रोध के वशीभूत होकर भगवान को भी शाप दे डाला। ऋषि सोभरी को एक मछली को काम वासना में लिप्त देखकर हजारों साल की तपस्या खो कर शादी करनी पड़ी। क्रोध में वशीभूत दुर्योधन के कारण महाभारत जैसा विनाशकारी युद्ध हुआ। इसी प्रकार लोभ में पड़कर भी आदमी जघन्य अपराध कर बैठता है। क्योंकि काम में असफल होने पर क्रोध व क्रोध से अविवेक पैदा होता है, जिससे स्मरण-शक्ति अथवा बुद्धि नष्ट हो जाती है, जिससे हर चीज उल्टी ही दिखती है।

'विनाश काले विपरीत बुद्धि।'

अतः इस यात्रा में इन शत्रुओं से बचकर एवं इस नश्वर संसार में अपने धन, यश, मर्यादा आदि को ईश्वर अनुकम्पा मानकर चलें। जीवन यात्रा में प्रिय या अप्रिय परिस्थिति को अपना प्रारब्ध मानकर बिना किसी को दोष दिए, कर्तव्य मार्ग पर अनासक्त भाव से बढ़ते रहें।

'काहू न कोऊ सुख दुःख कर दाता,
निज कृत कर्म भोग सबु भ्राता।
अस विचार नहि किजे रोसू,
काहूहि बादि न देवूअ दोसू।।'

उपरोक्त समस्त विकट मोड़ों से बचाकर संघ की सामूहिक संस्कारमय कर्म प्रणाली द्वारा, हाथ पकड़कर नाव में बैठाकर -निर्विघ्न रूप से भवसागर पार उतारने का बीड़ा श्री क्षत्रिय युवक संघ ने पूज्य तन सिंह जी के निर्देशन में उठाया था, जिसका कारवां मस्ती में बढ़ते गाता जा रहा है,

बड़े सवेरे किसी दिन पाया,
जैसे कुटिया में कोई है आया।
हाथ पकड़कर के उसने रथ में बिठाया।

पृष्ठ 31 का शेष

आदर्श और अनूठे गाँव

3. व्यवहारिक और लाभप्रद सरकारी योजनाओं को कुशलता से अपनाना।

श्री पोपटराव पवार में वे सभी नेतृत्व की विशेषताएँ हैं जो एक सफल नेता में होनी चाहिए। वह समूह का हिस्सा रहकर भी समूह का नेतृत्व करने की क्षमता रखते हैं। इस विकास की यात्रा में उन्होंने नीति निर्धारक, सहकर्मी और विकास को गति प्रदान करने वाले की भूमिका निभाई है।

दूसरा प्रेरणास्पद पहलू है ग्रामीणों की उत्साह पूर्ण भागीदारी, ऐसा प्रतीत होता है कि गाँव का विकास उनके जीवन का लक्ष्य बन गया। हरेक व्यक्ति अपना सुझाव भी देता है और साथ ही विकास को अपने स्वयं की धरोहर समझता है। गाँव के वृद्ध से लेकर छोटे बच्चे ने भी विकास को गति प्रदान करने के लिए सहर्ष अपना योगदान दिया है।

हिवरे बाजार की प्रगति का सर्वोत्कृष्ट सारमय पहलू जो रहा है वह यह कि विकास के सभी उपक्रमणों का सरकारी योजनाओं के अन्तर्गत कुशलता पूर्वक निष्पादित किया जाना है।

कठिन परिश्रम और दृढ़ आग्रहपूर्ण प्रतिबद्धता इस उपलब्धि की सहगामी रही है।

(क्रमशः)

अपनी बात

श्री क्षत्रिय युवक संघ एक साधना मार्ग है। संस्कार निर्माण की प्रक्रिया चलती रहती है, जिससे अन्तर में निखार आ सके। अन्तर में आत्मा स्थित है, वह परमात्म तत्व ही है। अन्तर के निखार से ही उस परमात्म तत्व में स्थिति प्राप्त होती है। एक बार वह भीतर का फूल खिल जाए तो फिर शाश्वत में जीवन जीना प्रारम्भ हो जाता है। पर संसार में तो रूपान्तरण चलता रहता है। इतिहास बदलता रहता है। यह चाक घूमता रहता है, इसे ही हम संसार कहते हैं। लेकिन केन्द्र में अडिग, थिर, अस्पर्शित रहे, उसे खोज लेना ही साधना है। संघ का यही प्रयास है।

साधना की बात की जाती है तो लोगों को जचती नहीं है। व्यक्ति हजार उपवास करता है। हजारों यात्राएँ करता है, दूर-दिगंत तक खोज करता है, सिर्फ अपने में नहीं खोजता है। कारण साफ है। यह मान लिया जाता है कि भीतर क्या रखा है, जो होगा वह तो बाहर होगा। ऐसा क्यों मान लिया जाता है? क्योंकि आँखें बाहर खुलती हैं, कान बाहर खुलते हैं, हाथ बाहर फैलते हैं। पाँचों इन्द्रियाँ बाहर की तरफ खुलती हैं, इससे एक भ्रान्ति हो जाती है कि जो भी है, बाहर है। रोशनी आती है तो बाहर से आती मालूम पड़ती है। सूरज बाहर निकलता है, चाँद बाहर उगता है। श्वास आती है तो बाहर से आती मालूम पड़ती है। प्यास लगती है तो पानी बाहर। भूख लगती है तो भोजन बाहर। सब बाहर। स्वभावत: यह ख्याल गहरा होता चला जाता है कि जो भी है बाहर है, भीतर क्या रखा है? हाँ बाहर सब कुछ है, सिर्फ एक को छोड़कर-परमात्म तत्व को छोड़कर।

बाहर सब कुछ है, सिर्फ एक को छोड़कर, स्वयं को छोड़कर। स्वयं का होना तो बाहर कैसे हो सकता है? वह तो सारी इन्द्रियों के पीछे बैठा है। वह तो इन्द्रियातीत है। हाथ से हम सब कुछ पकड लेंगे, पर उसको नहीं पकड़ पाएँगे जो हाथ के भीतर छिपा है, जो हाथों से चीजों को पकड़ता है। आँख से हम और सब तो देख लेंगे पर उसको नहीं देख पायेंगे जो आँख के पीछे है और आँख के झरोखे से जगत को देखता है? कान से हम सब कुछ सुन लेंगे, सुनने वाले को तो नहीं सुन पाएंगे। नाक से हम सब कुछ सूंघ लेंगे लेकिन सूंघने वाला तो अनसूंघा ही रह जाएगा।

जो अन्तर में स्थित उस परम तत्व को जानने की साधना जानता है वही करीने का व्यक्ति कहा जा सकता है। जिसने भीतर को जाना है वही सुसंस्कृत है। बाहर तो मिलती है सभ्यता, संस्कृति तो भीतर से उमगती है। सभ्यता की शिक्षा हो सकती है, संस्कृति की साधना होती है। सभ्यता दूसरे से सीखी जाती है, माँ-बाप सिखाते हैं, शिक्षक सिखाता है, स्कूल सिखाती है। सभ्यता बाहर से ही सीखी जाती है। सभ्यता व्यक्ति को सुन्दर बना देती है। अच्छे कपड़े पहनना, करीने से उठना-बैठना, शिष्टाचार, बोल-चाल के ढंग, व्यवहार-कुशलता, सब कुछ सिखाती है। पर भीतर चेतना वैसी की वैसी अपरिष्कृत है।

संस्कृति का जन्म भीतर होता है। स्वयं के जागरण से, स्वयं की ज्योति के जलने से, स्वयं की ऊर्जा से परिचित होने से, आत्म-अनुभव से होता है। वह भीतर का परिष्कार है और यह साधना से होता है। संघ का मार्ग ऐसी ही एक साधना है।

शिविर सूचना

यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के आगामी प्रशिक्षण शिविर निम्न प्रकार से होने जा रहे हैं -

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि
01.	मा.प्र.शि. (बालक)	05.11.2023 से 11.11.2023	हरियाया बगीचा, कृषि फार्म हाऊस, केसुआ तह. रेवदर, जिला-सिरोही सम्पर्क सूत्र : हरिसिंह केसुआ : मो. 8094541101

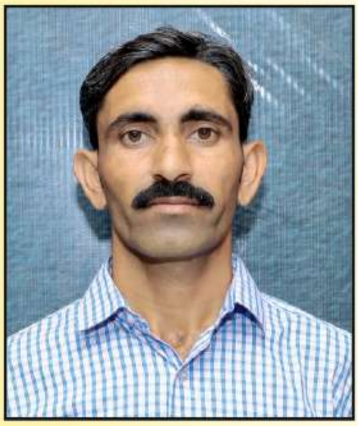

श्री क्षत्रिय युवक के स्वयं सेवक प्रवीण सिंह पुत्र श्री कालु सिंह जी सुरावा का अध्यापक भर्ती (प्रथम लेवल) में अंतिम रुप से चयन होने पर बहुत बहुत बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक कृष्ण पाल सिंह पुत्र श्री गंगा सिह जी केसुआ (सिरोही) का पीटीआई भर्ती में अंतिम चयन होने पर बहुत बहुत बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

-:शुभेच्छु:-

नाहर सिह जाखडी, महेंद्र सिंह कारोला, गणपतसिंह भवरानी
सरूप सिंह केरिया, नेहपाल सिंह दुधवा, पृथ्वीराज सिंह पांचला
हीरसिंह किलवा, गणपतसिंह पुर, हनुवंतसिंह सुरावा
सुरेन्द्रसिंह नांदिया प्रभावती, रेवतसिंह जाखड़ी
ईश्वर सिंह चौरा, देवी सिंह तैतरोल, विरम सिंह सुरावा
मुकन सिंह चेकला, जेठू सिंह सिवाड़ा, डूंगर सिंह पुनासा
गजेंद्र सिंह जाविया, मदन सिंह थूंबा, फूल सिंह जाखड़ी
सोभाग्य सिंह पांचोटा, महोब्बत सिंह धींगाणा, शक्तिसिंह आशापुरा
प्रेम सिंह अचलपुर, ईश्वर सिंह सांगाणा, ईश्वर सिंह देसू, मोती सिंह सेवाड़ा
देवराज सिंह मांडाणी, अर्जुनसिंह देलदरी, अमर सिंह चाँदणा
एवं समस्त स्वयंसेवक संभाग जालोर

राजस्थान राजपूत परिषद, मुंबई, महाराष्ट्र के अध्यक्ष पद पर श्री महेंद्र सिंह जी कुम्पावत को चुने जाने पर हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।।

-: शुभेच्छू :-

ईश्वर सिंह जागसा, परबत सिंह डूंगरी, तख्त सिंह बलाना
महेंद्र सिंह कवला, कान सिंह जाखड़ी
नारायण सिंह पूरन, कालू सिंह सावला खुर्द
भगवान सिंह मृगानैनी

अक्टूबर, सन् 2023
वर्ष : 60, अंक : 10

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति
ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान् ....

....

....

स्वत्वाधिकारी श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास के लिये, मुद्रक व प्रकाशक, लक्ष्मणसिंह द्वारा ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर से : गजेन्द्र प्रिन्टर्स, जैन मन्दिर सांगाकान, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर फोन : 2313462 में मुद्रित। सम्पादक-लक्ष्मणसिंह